حوار هادئ بين هندوسي ومسلم

हिंदू और मुस्लिम के बीच एक शांत संवाद

संकलन

मुहम्मद अल सैय्यद मुहम्मद

अनुवाद

मुहम्मद ज़ियाउल हक़ ग़ाज़ी

"ادْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ"

[سورة النحل : ١٢٥]

"अपने रब की राह की तरफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीहत से और उनसे उस तरीक़े पर बहस करो जो सब से बेहतर हो"

[सूरत -अल- नहल:१२५]

क्रम

किताब का नाम: .....हिंदू और मुस्लिम के बीच एक शांत संवाद

संकलन: ..... मुहम्मद अल सैय्यद मुहम्मद

अनुवाद: .....मुहम्मद ज़ियाउल हक़ ग़ाज़ी

प्रस्तावना

सारी प्रशंसा परमेश्वर के लिए है, आकाश और पृथ्वी के निर्माता, अंधकार और प्रकाश बनाने वाला, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई परमेश्वर नहीं, वह अकेला है उसका कोई साथी नहीं, मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं, हे अल्लाह, सारे नबीयों और रूसूल के अंतिम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बरकत नाज़िल फरमा और बरकत नाज़िल फरमा उनकी पत्नियों पर, उनके पाक घर वालों पर उनके साथियों पर और बरकत नाज़िल फरमा उनलोगों पर जिन्होंने उनकी मार्गदर्शन से हिदायत पाई और कयामत के दिन तक उनकी सुन्नतों पर कायम रहें !

शुद्ध वृत्ति, शुद्ध आत्मा और सामान्य दिमाग से इस्लाम की शिक्षा और संदेश पर विचार करनेवाला इस्लाम के संदेश को स्वीकार करने में पूरी तरह अनुकूलित हो जाता है ! यह एक हिन्दू द्वारा किये गए प्रश्नों और मुस्लिम द्वारा दिए गए इस्लाम का तार्किक उत्तर से स्पष्ट हो जाता है प्रस्तुत है निम्नलिखित हिंदू और मुस्लिम के बीच एक शांत संवाद:

****

(प्रश्न१): हिन्दू : पश्चिमी मीडिया जिस तरह इस्लाम और मुसलमानो को अतिवाद और आतंकवाद से जोड़ रहा है उस पर आपकी क्या टिप्पणी है?

(उत्तर1) : मुस्लिम: इस्लाम किसी भी रूप के अतिवाद और आतंकवाद से बहुत दूर है यदि कोई व्यक्ति इस्लाम की सहनशील शिक्षाओं के विपरीत कोई काम करता है यद्यपि वह अपना संबंधन इस्लाम से ही क्यों ना जोड़ता हो इस्लाम इस से बरी है और आप को जानने के लिए इतना ही काफी है कि शब्द "इस्लाम" का अर्थ ही शांति सुरक्षा और सुकून हैं!

ज्ञात हो कि शब्द (इस्लाम) का स्रोत (सलिम) है और शब्द (सलाम) का स्रोत भी (सलिम) है जिसकाअर्थ है: शांति सुरक्षा और सुकून! इस्लाम शांति का धर्म है जो सभी के लिए प्रकट हुआ है और सभी को समायोजित है इस्लाम की छाया में सभी सुख, शांति, सुरक्षा अन्याय और अत्याचार के अभाव का आनंद ले रहे हैं!

अल्लाह सर्वशक्तिमान फरमाता है:

(مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا)

[سورة المائدة: ٣٢]

" जिसने कोई जान क़त्ल की बग़ैर जान के बदले या ज़मीन में फ़साद किये तो जैसे उसने सब लोगों को क़त्ल किया "! [सूरत -अलमाइदा: 32]

इस्लाम में मनुष्य मनोवैज्ञानिक शांति अनुभव करता है जो कि असली और वास्तविक शांति है इस में मनुष्य अल्लाह सर्वशक्तिमान पर हुस्न ऐतक़ाद और ईमान से सुरक्षित हो जाता है अल्लाह पर ईमान से मनुष्य स्वयं को आश्वस्त महसूस करता है उसका हृदय शांत हो जाता है, इस्लाम का उच्चतम सन्देश, महान अनुदेश और श्रेष्ठ शिक्षण से उसका तन मन शांत रहता है!

****

(प्रश्न2) : हिन्दू : तो फिर इस्लाम का मफ़हूम क्या है

(उत्तर2) : मुस्लिम: इस्लाम का मफ़हूम: अक्ल दिल शरीर और अन्त मन से अल्लाह सर्वशक्तिमान के सामने आत्मसमर्पण करना और उसके आदेशों का अनुपालन करना है!

जब मनुष्य अक्ल और विचार का अनुपालन करता है तो उस ईश्वर के अस्तित्व पर ईमान ले आता है जिस ने उसे बनाया है और वह ईश्वर अल्लाह सर्वशक्तिमान है और वह उसकी एकता, महान क्षमता और ऊलूहियत पर ईमान ले आता है फिर वह उसके साथ शिर्क नहीं करता, उसके साथ किसी को भागीदार नहीं बनाता और उसकी ऊलूहियत पर उसकी शान के मोताबिक ईमान ले आता है उसकी अज़मत व जलालत पर बिगैर किसी अभाव के ईमान ले आता है !

जब मनुष्य दिल और आत्मा का अनुपालन करता है तो अपने परमेश्वर सर्वशक्तिमान से प्यार करने लगता है उसकी प्रशंसा , श्रद्धा और बड़ाई करने लगता है !

जब मनुष्य तन का अनुपालन करता है तो अपने परमेश्वर का आज्ञाकारी हो जाता है और निषिद्ध छोड़ देता है !

दास प्राणी का यह अनुपालन अपने परमेश्वर अपने निर्माता सर्वशक्तिमान से प्यार के कारण है उसकी संतुष्टि प्राप्त करने तथा उस स्वर्ग की आशा के कारण है जहाँ सदैव सुख और अनुग्रह है दास का यह अनुपालन अपने परमेश्वर के नाराज होने के भय तथा नरक की उस आग से बचने की आशा में है जहाँ सख्त दर्दनाक अज़ाब है!

****

(प्रश्न3) : हिन्दू : इस्लाम किस चीज़ की निमंत्रण देता है ?

(उत्तर3) : मुस्लिम : इस्लाम स्पष्ट सिद्धांत के साथ आया है जिस से मन प्रबुद्ध हो उठा है जिस के मार्गदर्शन और दिशा निर्देश से अपने निर्माता का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त हुआ, इस्लाम का सन्देश हर उस व्यक्ति के लिये है जो उसे अपनाना चाहता है और जिस से शुद्ध प्रकृति, बुद्धिमान आत्मा और साधारण मन भी सहमत है, जैसाकी इस्लाम के सन्देश से स्पष्ट है :

इस्लाम का सन्देश बिना किसी उलझन के शुद्ध विश्वास का है जिसे समझने और स्वीकृति में मन को ज़रा भी कठिनाई नहीं होती इसे हर तर्कसंगत व्यक्ति स्वीकार करने में ज़रा भी झिझक महसूस नहीं करता!

इस्लाम का सन्देश :

–इस्लाम का सन्देश परमेश्वर के अस्तित्व (अल्लाह सर्वशक्तिमान) और उसकी एकता पर ईमान लाना है उसे तमाम बुराई ,ख़राब विवरण,कमियों दोषों और वह सब कुछ जो की उसका योग्य नहीं है से पाक मानना है इस्लाम का सन्देश परमेश्वर के महान गुणों, महान योग्यता और क्षमता पर ईमान लाना है!

- एन्जिल्स (फ़रिश्ते) को अल्लाह का महान जीव मानते हुए उस पर ईमान लाना अल्लाह ने एन्जिल्स को पैदा किया और उसे आज्ञाकारिता इबादत और अपना आदेश लागु करने के लिए मोकर्रर किया है वह कोई गुनाह नहीं करते, अल्लाह ने उन्हें आज्ञाकारिता अथवा गुनाह की स्वतंत्रता नहीं दिया है इन्ही एन्जिल्स में से कोई रिविलेशन (revelation) के लिए मुकर्रर है अर्थात उन में से जिसे अल्लाह ने आदेशों, प्रतिबंधों मार्गदर्शन और शिक्षा के कार्य मनुष्यों में से अनपे चुने हुए बन्दे (नबी और रसूल) तक पहुचाने के लिए प्रभारित किया है वे उसे उन तक पहुंचाते हैं!

अल्लाह तआला अपना सन्देश फरिश्तों के ज़रिये अंबिया और रसूल पर रिविलेशन (revelation) द्वारा नाज़िल फरमाता है ताकि नबी और रसूल अल्लाह तआला का सन्देश लोगों तक पहुचाएं और उन्हें अल्लाह के सन्देश से शिक्षित करें!

- आसमानी किताबों पर ईमान लाना, यह किताबें अल्लाह ने हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम (जो रिविलेशन के लिए खास हैं) के ज़रिये अपने रसूलों पे नाज़िल फ़रमाया है यह किताबें मनुष्य के लिए आदेशों, प्रतिबंधों मार्गदर्शन और शिक्षा पर निर्धारित हैं!

–परमेश्वर के नबियों और दूतों पे ईमान लाना और इनकी इज़्ज़त करना, नबि और दूत वे होते हैं जिसे सृष्टि (मनुष्यों) में से ही ईश्वर सर्वशक्तिमान चुन लेता है ताकि वे परमेश्वर का सन्देश मनुष्य तक पहुचाएं, लोगों को उनके निर्माता उनके परमेश्वर से परिचय कराएं उसके एक ईश्वर होने पे ईमान लाने की दावत दें परमेश्वर के निर्देशन अनुसार इबादत का तरीक़ा बताएं (जो कि उसकी हिकमत और मशिय्यत से खली नहीं है) ताकि मनुष्य अपने कार्यान्वयन के माध्यम से उनउपदेशों और आदेशों का पालन करें!

– आख़िरत के दिन पर ईमान लाना, यह वह दिन है जिस दिन सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा लोगों को उनकी मृत्यु के बाद फिर से दोबारा ज़िंदा किया जाएगा और उनसे दुनिया में उनका ईमान उनके काम–काज का हिसाब लिया जाएगा तो जिस ने अति मात्रा में भी अच्छा काम किया होगा वह उसका बदला और सवाब पाएगा और जिस ने अति मात्रा में भी बुराई किया होगा तो वह उसके लिए आयोजित जवाबदेह होगा और उसका आत्मनिरीक्षण किया जाएगा।

– अच्छी बुरी तक़दीर पे ईमान, इसका मतलब यह है की : इस दुनियां में जो कुछ भी होता है या हो रहा है और मानव के साथ जो भी अच्छा या बुरा होता है (आसानी या तंगी, अमीरी ग़रीबी सेहत और बीमारी) यह सब पहले से अल्लाह की ओर जे लिखा जा चूका है (सर्वशक्तिमान के हिकमत और उसकी इच्छा अनुसार) और उसके बारे में सर्वशक्तिमान को पूरी जानकारी है और वह अधिक जानने वाला और अधिक विशेषज्ञ है!

–मार्गदर्शक पूजा जीस से मानव मानस पवित्र हो जाता है, दोष बुराइयों और खराब नैतिकता से पाक साफ हो जाता है नैतिकता और एहसान के आला मर्तबे पे फ़ाइज़ हो जाता है!

– अच्छे मुआमलात प्रशंसनीय कानून और उच्च शिक्षा , ताकि संपूर्ण मानव जीवन न्याय ईमानदारी और सीधे तरीके से चले!

– शिक्षा विज्ञान और जीवन के सभी क्षेत्रों में मानव जाति की प्रगति एवं उन्नति!

– अच्छाई और नेकी करना एवं बुराई से बचना!

– न्याय इहसान ररिश्तेदारों के साथ अच्छा बर्ताव करना और अन्याय अनैतिकता अभद्रता और बुराई से बचना!

– मनुष्य का सम्मान और उसकी जीवन का संरक्षण करना

– जीवन के सभी चरणों में नारी का सम्मान करना, जन्म और बचपन से लेकर (छोटी बच्ची से लेकर बड़ी होकर दुल्हन बन जाने तक) (शादी की अवस्था से गुज़रते हुए एक पत्नी के रूप में) और मां बनने की अवस्था से गुज़रते हुए (मां और दादी के रूप में) दादी के अवस्था तक!

– बच्चों के प्रजनन का एहतमाम और उनके साथ करुणा और दया करना

– युवा व्यवस्था पे ध्यान

– दूसरे प्राणियों के साथ दया करना (पशु, पक्षी, पेड़, पौधा इत्यादि, , ,)

– दूसरे धर्मों के मानने वालों के साथ बुद्धि और अच्छी सलाह का उपयोग करते हुए मानसिक और तार्किक संवाद करना ताकि वे एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर पे ईमान लाएँ जो सब का निर्माता है और उसके साथ शिर्क ना करें!

– गैर– मुस्लिम के साथ अच्छा व्यवहार

– एकरूपता, एकजुटता, समरसता, आपसी स्नेह और आपसी करुणा अपनाना

– युद्ध में क्षमा, मुसलमानों का अपने दुश्मनों के खिलाफ युद्ध या तो दुश्मनों पर आक्रामकता के कारण या अपने धर्म (इस्लाम) की रक्षा की वजह से थी और इस्लाम की तबलीग की रक्षा के कारण इस्लाम की छवि को विकृत और उसकी वास्तविकता को बिगाड़ने वालो के विरुद्ध थी और उसके विरुद्ध थी जो इस्लाम की निमंत्रण और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के संदेश उसकी शिक्षा एवं परिचय को जनता तक पहुचाने से

रोकता है परन्तु इस्लाम ने मुसलमानों को युद्धों में राजद्रोह और विश्वासघात से मना किया है बच्चों, महिलाओं, विकलांग और बुजुर्ग (गैर–योद्धाओं) की हत्या से मना किया है और आत्मसमर्पण करने वालों, निहथ्थों (जो मुसलमानों से नहीं लड़ते) की हत्या से मना किया है! घरों को तोड़फोड़ करने, पेड़ काटने, शहरी विध्वंस और धरती पे किसी भी रूप के भ्रष्टाचार से मना किया है ! इस्लाम दया और क्षमा पर आधारित धर्म है लड़ाई में मानवीय व्यवहार और लेनदेन में न्याय पर आधारित है!

– युद्ध के कैदियों के साथ अच्छे मामला करना!

– शांति के सिद्धान्त और शांति के साधन को अपनाना और उग्रवाद एवं आतंकवाद से दूर रहना है प्रतिबद्धताओं और प्रसंविदाएं को निभाना है!

****

(प्रश्न4) : हिन्दू: इस्लाम एक ईश्वर में विश्वास की दावत क्यों देता है?

(उत्तर4) : मुस्लिम: सबसे पहली बात यह है कि इस्लाम धर्म मनुष्य को जगत के निर्माता पर ईमान लाने के लिए आमंत्रित करता है और वह निर्माता (सर्वशक्तिमान ईश्वर) अल्लाह है! जिस तरह प्रत्येक मौजूद वस्तु के लिए उसका बनाने वाला चाहिए प्रत्येक निर्माण का निर्माता चाहिए ठीक उसी तरह प्रत्येक प्राणी का निर्माता होना चाहिए और इसी बात को सामने रखते हुए अपने ईश्वर एवं निर्माता के अस्तित्व में विश्वास होना चाहिए यद्यपि उसे देख नहीं सकते लेकिन अनगिनत प्रभाव और सबूत उसकी अस्तित्व के साक्ष्य है!

उसका उदाहरण: इंसान अपनी आत्मा को नहीं देखता परंतु जीवन के अस्तित्व के कारन उसकी अस्तित्व में विश्वास रखता है, वह अपनी अक़्ल को नहीं देखता लेकिन वह प्रतिबिंब और चिंतन की क्षमता के कारन उसके अस्तित्व में विश्वास रखता है, इसी तरह आकर्षण–शक्ति को देखा नहीं जा सकता लेकिन आकर्षण की शक्ति के कारन उसकी वजूद पे यकीन रखता है... आदि!

ठीक इसी तरह परमेश्वर सर्वशक्तिमान निर्माता के अस्तित्व पर अगणनीय निशानियां प्रभाव और सबूत वाचक है!

– इस्लाम सर्वशक्तिमान निर्माता ईश्वर की ताज़ीम, उसके महान गुणों ,कमाले हिकमत पूर्णता इल्म और बहुमुखी प्रतिभा एवं क्षमता पर ईमान लाने के लिए आमंत्रित करता है!

यह सारी चीजें बेशक सर्वशक्तिमान अल्लाह के एक होने, ओलिहियत में मुनफ़रिद होने की सन्देश देती हैं !

-बेशक सर्वशक्तिमान अल्लाह केवल एक ही ईश्वर है बेशक सर्वशक्तिमान अल्लाह तन्हा इस दुनिया के तसर्रुफ़ का मालिक है और उसके इलावा किसी और को यह छमता नहीं ईश्वर केवल एक है और वह केवल सर्वशक्तिमान अल्लाह है!

****

(प्रश्न5) : हिन्दू: क्या प्रमाण है कि भगवान एक ही परमेश्वर है (निर्माता, रक्षक दुनिया के तसर्रुफ़ का मालिक) दो या तीन या अधिक परमेश्व क्यों नहीं ?

(उत्तर5) : मुस्लिम: इससे पहले कि मैं जवाब दूँ मैं आप से पूछना चाहता हूँ क्या आप जानते हैं कि हिंदू शास्त्र केवल एक परमेश्व होने पर इस्लाम से सहमत है?

हिंदु: यह कैसे?

मुस्लिम: हिंदू ग्रंथों में कई स्थानों पर केवल एक ही ईश्वर का उल्लेख है उसका कोई दूसरा नहीं, ग्रंथों में उल्लेख किये गए स्थानों में से कुछ की रेफ्रेंस नीचे हैं,

-(किताब :उपनिषद- चंडोज्ञ/भाग6 डिवीज न: 2/ संख्या: 1) में संस्कृत भाषा में कहा गया है जिसका अर्थ है कि: बेशक भगवन एक है उसका कोई दूसरा नहीं –(किताब :उपनिषद- भाग 6: संख्या: 9) में संस्कृत भाषा में कहा गया है जिसका अर्थ है कि: भगवान के साथ कोई अन्य भगवान नहीं, यानी: उसके कोई माता पिता नहीं, वह सर्वोच्च ईश्वर है कोई भी उससे ऊपर नहीं है!

इस के इलावा और भी बहुत सारी जगहों पर हिन्दू शास्त्रों में इस बात का ज़िक्र है की भगवान किवल एक है और अल्लाह सर्वशक्तिमान की वहदानियत पर बेशुमार दलीलें मौजूद है जिसमें से कुछ नीचे दर्ज है!

1- प्राकृतिक प्रमाण: हर पैदा होने वाला बच्चा फ़ित्रतन अपने पैदा करने और बनाने वाले पर ईमान के साथ पैदा होता है एक अल्लाह पर ईमान के साथ पैदा होता है इसका प्रमाण यह है की आप जब नवजात शिशु को सचेत और जागरूक बनने के लिए उसके आस्था में बगैर किसी बाहरी प्रभाव के उसे एकेला छोड़ दें तो जल्द ही आप इस बात को महसूस करेंगे कि उसका आस्था वही है जिस पर अल्लाह ने उसे पैदा किया है उसका झुकाव अपने पैदा करने और बनाने वाले की तरफ है और फिर यह कारक उसे केवल एक ईश्वर पर ईमान लाने के लिए उभारता है वह ईश्वर जो महान बलवान और सभी प्राणियों की रचना पर सक्षम है!

अक्सर हम यह देखते हैं कि इंसान (जागरूक और सचेत) अपनी ज़रुरत और आवश्यकता के समय ईश्वर को यह कहते हुए पुकारता है:

हे भगवान, हे प्रभु, हे सृष्टिकर्ता (एक भगवन मुराद लेते हुए दो या ज्यादा या अन्य नहीं) मुझे मार्गदर्शन दे - मेरा मामला आसान कर - मेरी ज़रुरत पूरी कर- मुझे अकेला मत छोड़..., यह कहते नहीं मिलेगा ओ मेरे भगवानो, हे सृष्टिकर्ताओ, हे वे जिन्हों ने मेरी सृस्टि की (बहुवचन के संदर्भ मे), जो दर्शाता है की निर्माता और विधाता केवल एक ही परमेश्वर है और वह अल्लाह, सर्वशक्तिमान है।

2- यदि किसी व्यक्ति से पूछा जाए कि: उसको किसने पैदा किया किस ने बनाया और किस ने सम्पूर्ण जीव को पैदा किया और बनाया?

तार्किक उत्तर यह होगा कि जिस ने उसे पैदा किया बनाया और जिस ने सम्पूर्ण जीव को पैदा किया और बनाया अवश्य एक महान शक्तिशाली परमेश्वर है जो अपनी क्षमता का वर्णन रचना और निर्माण द्वारा करता है और अगर इसी प्रश्न को बार बार अलग अलग ढंग से इस प्रकार किया जाए: किसने इस भगवान की रचना की और किस ने उसे वजूद बख्शा और अगर मान लिया जाए कि उसका उत्तर इस तरह है: ज़रूर एक और भगवान है जो अपनी क़ुव्वत और अज़मत ज़ाहिर करता है तो वह इस एक ही तरह के अनंत सवाल के तकरार से परेशान हो जाएगा की किसने इस भगवान की रचना की और किस ने उसे वजूद बख्शा इस प्रकार उत्तर बार बार दोहराया जाता रहेगा और सही उत्तर तक पहुचना मुश्किल हो जाएगा इसका कारण यह है जवाब शुरू से ही तर्कविरय्द्ध और गलत था!

इस सवाल का सही जवाब होगा: कि वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर जिस ने इस दुनिया और मानव जाती को बनाया और उसे वजूद में लाया उसे कोई बनाने वाला नहीं है यहां से यह मालूम होता है कि केवल एक ईश्वर के इलावा कोई और भगवान नहीं जो अपनी महानता और बहुमुखी प्रतिभा का वर्णन अनस्तित्व से चीजों को अस्तित्व देकर करता है यही तार्किक और प्रारूपिक उत्तर है और सामान्य ज्ञान रखने वाला कोई भी व्यक्ति इसका इंकार नहीं कर सकता!

- और जैसा की इससे पहले मैं ने वर्णित किया की सर्वशक्तिमान ईश्वर केवल एक है उसके इलावा कोई और भगवान नहीं वही अकेले इस दुनियां को चलता है उसके इलावा कोई इस दुनियां का मालिक नहीं एक ईश्वर के इलावा कोई पूजा के लायक़ नहीं (और वह सर्वशक्तिमान ईश्वर अल्लाह पाक है) !

3–अगर मान लिया जाए की एक से ज्यादा ईश्वर है और प्रत्येक ईश्वर के लिए स्वतंत्र इच्छा है, अब उनमें से एक ईश्वर कुछ करना चाहता है जबकि दूसरा उस काम का बिलकुल विपरीत काम करना चाहता है (उदाहरण के लिए उन में से एक किसी वस्तु को हरकत देना चाहता है जबकि दूसरा हरकत देना नहीं चाहता) तो उस वक्त क्या होगा ?

इस प्रश्न का उत्तर (जो एक कल्पित धारणा का परिणाम था) तीन संभावनाओं से बाहर नहीं होगा जो इस प्रकार है:

क – या तो दोनों का इरादा पूरा होगा, जो एक झूठा दावा है क्योंकि यह अक़्ल के खेलाफ है जैसे के एक ही समय में जिस्म को हिलाना और ना हिलाना सम्भव नहीं

ख – या दोनों अपने इरादे को पूरा नहीं कर सकते और यह भी एक झूठा दावा है क्योंकि सब कुछ करने की छमता रखने वाले भगवान में असहाय होना पाया जाएगा जो की असम्भव है

ग -या तो केवल एक की मुराद पूरी होगी और दूसरे की नहीं, तो उस समय सच्चा परमेश्वर वह होगा जो सब कुछ करने की छमता रखता है

इस धारणा के पुनरावृत्ति से यह बात साफ हो जाती है कि एक सच्चा ईश्वर के इलावा कोई और ईश्वर नहीं और वह ईश्वर हर चीज़ पैदा करने वाला और बनाने वाला है जो इस दुनियां का मालिक है और अपना इरादा पुरे करने में सक्षम है

4- अगर एक से अधिक भगवान होते तो कभी एक भगवान की दूसरे पे और कभी दूसरे भगवान की पहले पे महानता प्राप्त होती और इस तरह आकाश और पृथ्वी नष्ट हो जाते संसार, संपूर्ण मानवता जीवन, जीव एवं परिसंपत्तियों का विनाश हो जाता

लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है बल्कि इस संसार में संतुलन और समानता है ज्ञात हुआ की केवल एक ही भगवान है और वह भगवान महान मजबूत सक्षम और सब कुछ का मालिक है और वह सर्वशक्तिमान अल्लाह है

यह उदाहरण जिस की मैं ने उल्लेख किया है: अगर प्रशासन या राज्य स्थापित करने के लिए हार जीत की लड़ाई होती तो प्रत्येक पक्ष प्रशासन और राज्य हासिल करने के प्रयास में संघर्ष और युद्ध करता (जो हत्या, विनाश और तबाही का सबब है) और किसी एक पक्ष का अकेले शाशन में आए बिना और अपने देश में स्थिरता स्थापित किया बिना स्थिरता कायम नहीं हो सकती

अच्छा यदि किसी देश में एक से अधिक राष्ट्रपति हो तो क्या उस देश में स्थिरता स्थापित होगा ?

निश्चित रूप से: नहीं, निसंदेह उन के बीच विवाद उत्पन्न हो जाएगा और इसके अतिरिक्त यह की विवाद के फलस्वरूप राज्य की प्रगति रुक जाएगी और राज्य का हानि और नुकसान होगा,

यह स्पष्ट है कि दुनिया के सारे देश इसबात पर सहमत हैं की हर देश का केवल एक व्यक्ति ही राष्ट्पति हो,ठीक इसी तरह जीव और परिसंपत्तियों के इस ब्रह्मांड के लिए भी यही बात है, बेशक उनका निर्माता और उन्हें बनाने वाला केवल एक का मालिक और वह ईश्वर महान मजबूत सक्षम और सब कुछ है ईश्वर है!

५-अगर मान लिया जाए कि एक गुलाम का केवल एक ही व्यक्ति मालिक है और वह गुलाम अपने मालिक के आज्ञा का पालन करता है और बिना किसी विलंब के उसके विशेष आदेश और निर्देशों का कार्यान्वयन करता है, अगर यह ग़ुलाम एक से अधिक व्यक्ति के पास बेच दिया जाए (दो, तीन, या ...) अब वह अपने सभी मालिकों के आदेशों और आज्ञा का पालन करने की कोशिश करता है तो क्या उसकी हालात और उसका मामला ठीक ठाक रहेगा?

निश्चित रूप से: नहीं। क्योंकि पहली हालत में (जब वह एक ही व्यक्ति का गुलाम था) उसका मन साफ़ था, आराम और सुकून से था, और अपने मालिक की संतुष्टि से उसकी कृपा से आत्म विजेता था लेकिन दूसरी हालत में (एक से अधिक व्यक्ति के स्वामित्व में) खुद को चित्तभ्रांत ,विचलित और चिंताशील महसूस करेगा स्वयं को अपने मालिकों की सहमति हासिल ना कर पाने वाला और उनके प्रतिकार का दण्डित पाएगा कियोंकि अपने मालिकों के हुक्म में अंतर और असंगति की वजह से किसी एक के हुक्म मानने और दूसरों के आदेश को नजरअंदाज करने पर मजबूर होगा और एक का हुक्म मान कर दूसरे का गुनाहगार होगा, फिर किसी और मलिक के आज्ञाकारिता और आदेश को लागू करने में दूसरे मालिकों का उपेक्षा करके गुनाहगार होगा और इस तरह अंत में सभों के आज्ञा का उल्लंघन करने की वजह से गुनहगार होगा सभों के गुस्से एवं दंड का योग्य होगा!

जब बहुत सारे भगवान होंगें और उनके आदेश परस्पर विरोधी होंगें उनके मार्गदर्शन भिन्न होगा तो यह कमजोर प्राणी सेवक कहाँ जाएगा किस के आदेश का पालन करेगा?

यदि उन में से किसी एक (देवताओं में से एक) के आदेश का पालन करेगा एक की संतुष्टि प्राप्त करेगा तो दूसरे या अन्य दूसरे का गुनाहगार होगा उनके गुस्से एवं दंड का योग्य होगा!

यह भी इस बात की पुष्टि करता है कि निसंदेह निर्माता, वजूद देने वाला शक्तिशाली महान कुदरत वाला हर चीज़ का मालिक तनहा इबादत के लाइक ज़रूरी है की केवल एक ईश्वर हो और वह सर्वशक्तिमान अल्लाह है!

****

(प्रश्न6) : हिन्दू: इस्लाम में क्यों बहुदेववाद (एक से अधिक भगवान का अस्तित्व) सबसे बड़ा पाप है ?

(उत्तर6) : मुस्लिम : इसका कारण बिल्कुल स्पष्ट है सच्चा परमेश्वर अल्लाह सर्वशक्तिमान ही है और उसके इलावा सारे झूठे और अशक्त माबूद परमेश्वर नहीं हैं अन्ताथा किसी चीज़ के होने और ना होने में निर्माता और प्राणी में वजूद देने वाला और मौजूद वस्तु में **क्या अंतर** रह जाएगा..., दो असंगत के बीच पूर्ण समानता कभी नहीं किया जा सकता इसलिए, **एक से अधिक** परमेश्वर का दावा, सबसे बड़ा अन्याय और भगवान के अधिकार का सबसे बड़ा उल्लंघन है, परमेश्वर एक है और वह सर्वशक्तिमान अल्लाह है जो ना पैदा हुआ और न उसकी कोई संतान है वह सच्चा ईश्वर है और ईश्वरत्व में अद्वितीय है!

निम्न में दिये उदाहरणों से इसे अधिक स्पष्ट किया जा सकता है:

–क्या कोई सुल्तान या राजा यह स्वीकार करेगा की कोई उसकी सत्ता में विवाद करे क्या यह संभव है ? निश्चित रूप से: नहीं।

–क्या कोई (सम्मान स्वस्थ) व्यक्ति अपनी पत्नी में एक और आदमी की भागीदारी स्वीकार करेगा क्या यह संभव है? निश्चित रूप से: नहीं।

– यदि कोई इंसान अपने अकेला सेवा के लिए कोई नौकर रखता है अपने नौकर को वह उसके समय और मेहनत का पेमेंट करता है क्या वह व्यक्ति इस बात को पसंद करेगा कि उसका वह नौकर किसी दूसरे की नौकरी करे क्या यह संभव है? निश्चित रूप से: नहीं।

यदि यह हाल मामला एक मानव प्राणी का है जिसे अपने हक़में विवाद स्वीकार नहीं तो सर्वशक्तिमान परमेश्वर केबारे में आप का क्या ख्याल है जो इस दुनिया का निर्माता है जिसकी कुदरत में सबकुछ है जो तन्हा इस दुनियां को चलाता है!

क्या यह संभव है सर्वशक्तिमान ईश्वर यह स्वीकार करेगा की कोई (अनुचित रूप से) उसकी हुकूमत में विवाद करे और उसका पार्टनर बने?

निश्चित रूप से : नहीं सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपने हक़ में दूसरों की तुलना में अधिक सम्मान स्वस्थ है!

जीव पर सब से पहला हक़ सर्वशक्तिमान परमेश्वर का है इसलिए ज़रूरी है की सारी जीव उसके माबूद और एक ईश्वर होने का इक़रार करें और ईश्वर की नेमतों का इक़रार करें !

****

(प्रश्न7) : हिन्दू: इस्लाम में क्यों भगवान का छवियों और मूर्तियों के रूप में चित्रण निषिद्ध है?

(उत्तर7) : मुस्लिम: उत्तर देने से पहले इस बिंदु पर भी मैं आप से पूछना चाहता हूँ कि क्या आप जानते हैं कि हिन्दू शास्त्र इस बात पर इस्लाम धर्म से सहमत है की छवियों और मूर्तियों के रूप में भगवान का चित्रण निषिद्ध है?

हिन्दू: यह कैसे ?

मुस्लिम: हिन्दू शास्त्रों में कई स्थानों पर छवियों और मूर्तियों के रूप में भगवान के चित्रण से रोका गया है जो निम्नलिखित हैं:

किताब :उपनिषद- श्वेताश्वतारा / भाग 4/ संख्या: 19) में कहा गया है जिसका मतलब है की: (भगवान का कोई प्रतिमा नहीं है)

शब्द " प्रतिमा " एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है : प्रतीक, छवि, आरेखित करना, वर्णन, मूर्ति, बुत, नक्काशी, कक्षक्लिक चेहरा, और इसका मतलब यह है कि भगवान का कोई प्रतीक, छवि, स्केच, वर्णन, मूर्ति, बुत, नक्काशी या चित्र नहीं है!

- इस अर्थ की पुष्टि कई अन्य स्थानों पर भी होती है जिनमें से यजुर्वेद भी एक है! (यजुर्वेद खंड: 32 / कुल: 3)

उल्लेखित बातों से स्पष्ट हो जाता है कि: इस्लाम का सन्देश निर्माता परमेश्वर की सिफ़तों की प्रशंसा करना है ना की पत्थर या मिट्टी का प्रतिमा बनाकर उसकी सिफ़तों को कम करना!

यह अक्ल के खिलाफ है की जिस परमेश्वर ने मानव प्राणी को अनस्तित्व से अस्तित्व में लाया वही मानव प्राणी परमेश्वर की अलग अलग रूपों में विभिन्न प्रतिमाएं बनाए

(इसके बावजूद की मानव प्राणी ने अपने निर्माता को कभी देखा ही नहीं) तथा फिर कोई दूसरा आदमी आए और अन्य रूपों और छवियों में अपने भगवान की प्रतिमाएं बनाए इत्यादि इसी तरह और भी?

प्राणी द्वारा निर्माता के प्राणियों में से किसी प्राणी की शक्ल में उसकी प्रतिमा बनाना परमेश्वर का अपमान है तथा निर्माता परमेश्वर हर उस प्रतिमा से महान है जिसे मानुष द्वारा कल्पना किया जा सकता है और इस तरह के चित्र , विभिन्न आकार और रूप की मूर्तियां समय बीतने के साथ मानव मानस के लिए महिमागान का कारण बन जाती हैं और सच्चा परमेश्वर को छोड़ कर जो की तनहा महिमागान और पूजा के योग्य है प्रतिमा की पूजा और प्रार्थना करने लगता है (विशेषकर यदि वे बड़े और अजीब दृश्य के हों) और इस बात का सबूत कई देशों में मिलता है!

सर्वशक्तिमान परमेश्वर सब को पैदा करने वाला और सब को बनाने वाला है उसके इख्तियार में हर चीज़ की बादशाहत है वह हर चीज़ को अकेले निपटाता है चाहे वह प्राणी हो या निर्मित !

और यही हिकमत है की इस्लाम ने ईश्वर का प्रतिमा बनाने से मना किया है चाहे वह मिट्टी का प्रतिमा हो या पत्थर का और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शान के मोताबिक उसकी पूजा और ताज़ीम करने का आदेश दिया है!

****

(प्रश्न8) : हिन्दू: हिंदू कहते हैं की प्रतिमाओं की पूजा का उद्देश्य केंद्रित ध्यान के साथ भगवान की पूजा करना और मन में व्याकुलता का अभाव कम करना है, इस बारे में आप का क्या कहना है?

(उत्तर8) : मुस्लिम: यह बात निराधार है मैं उदाहरण के माध्यम से इसे स्पष्ट करना चाहता हूँ:

क्या यह कल्पना किया जा सकता है की कोई महिला अपने पति को छोड़ किसी ग़ैर मर्द की छवि इख़्तियार करे इस गुमान में की इस से उसका मन अपने पति की याद में ज़यादा केन्द्रित और अज्ञानकारी होगा और उसे भूलना नामुमकिन होगा ? जबकि इस की आज्ञा उसके पति ने उसे नहीं दिया है क्या पति के लिए यह मुमकिन होगा की इस तरह के ग़लत और निराधार दावे को कोबुल करे?! निश्चित रूप से: नही इसके और उसके बीच कोई संबंध नहीं है और पति अपने अधिकार में इसे गंभीर गलती मानेगा!

ठीक इसी तरह अल्प, नाज़ुक और दुर्घटनाग्रस्त होने वाले प्रतिमा (एक कमज़ोर - जीव द्वारा बनाया गया) सर्वशक्तिमान विश्व के निर्माता ईश्वर से क्या रिश्ता और क्या संबंध है?! निसंदेह ज़रा भी संबंध का कोई गुंजाइश नहीं और ऐसे निर्धारित दावे को मानना ईश्वर का अपमान है!

बल्कि यह अपमानजनक तस्वीरें ऐसे ईश्वर की कल्पना की धारणा देती है जो उसकी महिमा और गौरव के योग्य नहीं हर कोई अपने अपने ढंग से अलग अलग शक्लो सूरत में अपने भगवन की मूर्ति बनाता है और जिस जिस भवगान की पूजा करता है उस पे गर्व के कारन हर व्यक्ति अपने भगवान को दूसरे के भगवान से शक्तिशाली बताता है एक भगवान की मूर्ति दूसरे भगवान की मूर्तियों से अलग होती हैं कोई मूर्ति उच्च दर्जा की होती है तो कोई कम दर्ज़ा की और कोई उस से भी कम दर्ज़े की... और इसी तरह, गाय को अन्य पूजनीय जानवरों से अधिक पवित्र माना जाता है और प्रत्येक का अलग अलग ढंग से अपनी इक्छा अनुसार पूजा किया जाता है!

यहीं से यह बात स्पष्ट हो जाती है की इस तरह के गैर प्रमाणित और बिना सबूत के बातों की कोई वजूद नहीं है!

****

(प्रश्न9) : हिन्दू: हिंदू धर्म गायको पवित्र मानते हुए उसकी वध तथा मांस खाने पर प्रतिबंध लगाता है जबकि इस्लाम उसकी (और अन्य शाकाहारी जानवरों का) वध तथा मांस खाने को अधिकृत करता है इस बारे में इस्लाम का क्या दृष्टिकोण है?

(उत्तर9) : मुस्लिम: गाय इस्लाम में अन्य पालतू जानवरों की तरह है जिसे सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मानव मानस के लाभ के लिए बनाया है ताकि इंसान उसके दूध, मांस और खाल इत्यादि से लाभ उठा सके और अगर ऐसा नहीं है तो हिन्दू उसके मांस को छोड़ दूध इत्यादि से क्यों लाभ उठाते हैं? चलें सर्वशक्तिमान ईश्वर की सृष्टि पर थोड़ा विचार करते हैं कि मानव और अन्य प्राणियों को उसने किस प्रकार पैदा किया:यदि हम गाय सहित शाकाहारी पशुओं को देखें तो हम पाएंगे कि ईश्वर ने उसके दांत फ्लैट बनाया है (नुकीले नहीं बनाया) और उसके आंतों को पतली बनाया (मोटी नहीं बनाया) और यह सब उसके शाकाहारी इत्यादि आहार पैटर्न सूट करने के लिए है!

इससे स्पष्ट संकेत मिलता है की इस तरह के जानवरों को इस प्रकार के आहार (शाकाहारी इत्यादि) खाने और पोषण करने की अनुमति है!यदि हम मांसभक्षी पशु को देखें तो हम पाएंगे कि ईश्वर ने उसके दांत नुकीले और आंतें मोटी बनाया है और यह सब उसके आहार पैटर्न के अनुरूप है।

इससे स्पष्ट संकेत मिलता है की इस तरह के जानवरों को इस प्रकार के आहार (मांस) खाने और पोषण करने की अनुमति है!

और यदि हम मनुष्य को देखें तो हम पाएंगे कि ईश्वर ने इनके दांत फ्लैट एवं नुकीले बनाया है तथा ईश्वर ने इनकी आंतें पतली और मोटी बनाया है और यह सब उनके आहार पैटर्न के अनुरूप है।

इससे स्पष्ट संकेत मिलता है की मनुष्य को भोजन के लिए दोनों प्रकार के खानों की अनुमति है (सब्जियां इत्यादि और मांस, गौमांस सहित) और दोनों प्रकार के खाने पोषण करने की अनुमति है (अल्लाह के हराम किये हुए को छोड़ कर हानिकारक और नुकसानदेह मांस में से जैसे सड़ा हुआ मांस, मृत मांस और पोर्क..गंभीर बीमारियों की बड़ी संख्या के कारण जिसका आधुनिक विज्ञान नेडिस्कवर किया है)

****

(प्रश्न10) : हिन्दू: इस्लाम क्यों मनुष्य, चित्रों, मूर्तियों, गायें और अन्य जानवरों एवं परिसंपत्तियों में समाधान के सिद्धांत को निषेधित करता है (और उनकी पूजा एवं श्रद्धा को अवैधित करता है) ?

(उत्तर10) : मुस्लिम: यह स्पष्ट है कि समाधान के सिद्धांत (मूर्तियों प्रतिमाओं और जानवरों एवं अन्य में भगवान का समाधानित होकर एक हो जाना) एकेश्वरवाद के विरूद्ध है जो निर्माता ईश्वर को अपने प्राणियों की अलग अलग छवियों में उपस्थित होने की आस्था को जन्म देता है – प्रत्येक अपनी इच्छा अनुसार – यही कारण कोई समाधानित सिद्धांत सूर्य, तारे और ग्रहों में समझता है तो कोई गायों और अन्य पशुओं में महसूस करता है!

इसके अलावा कोई समाधानित सिद्धांत मूर्तियों प्रतिमाओं और पत्थरों में देखता है तो कोई पेड़ों और पौधों में महसूस करता है...और बहुत से लोग ऐसे है जो समाधानित सिद्धांत अशुद्ध एवं बदबूदार स्थानों सहित हर वस्तु में महसूस करते हैं!

पिछले एक प्रश्न के उत्तर में स्पष्ट किया गया है की निर्माता और प्राणी के बीच, बनाने वाला और जीवंत के बीच बड़ा अंतर है दो अतिवाद के बीच पूर्ण समानता नहीं किया जा सकता, फिर भी प्राणी और निर्माता के बीच समानता की बात करना अन्यायपूर्ण और प्राणी द्वारा निर्माता का बड़ा अपमान है!

और फिर प्रश्न यह है कि:

– क्या यह महान परमेश्वर के योग्य है कि अपने प्राणियों में से किसी प्राणी मे समाधानित हो जो सभी कमी और दोष से पाक है और उत्तमता के सभी गुण जिसके साथ विशेष है ? निश्चित रूप से: नहीं।

–क्या यह महान परमेश्वर के योग्य है कि उस मनुष्य में समाधानित हो जो सोता पेशाब और मलत्याग करता है जिसके पेट में (गंदा अशुद्ध मलमूत्र) मल रहता है! है!

- क्या यह महान और अनंत परमेश्वर के योग्य है कि ऐसे इंसान में समाधानित हो जिसे अनिवार्य रूप से मरना है और फिर मृत्यु के बाद एक बदबूदार लाश बन जाना है? निश्चित रूप से:नहीं।

– क्या यह महान परमेश्वर के योग्य है कि ऐसी निंदनीय मूर्ति में समाधानित हो (नाज़ुक और हलाक हो जाने वाली) जिसे एक कमजोर प्राणी ने बनाया है? निश्चित रूप से: नहीं।

-क्या यह महान परमेश्वर के योग्य है कि पेशाब और गोबर करती है और (जिसके पेट में रक्त, गोबर और अशुद्धता है) और जिसे वध होना या मरना है और एक बदबूदार लाश बन जाना है? निश्चित रूप से: नहीं।
– क्या यह महान परमेश्वर के योग्य है कि वह एक धूलमय और ना पसंदीदा पशु में समाधानित हो (चूहे .. आदि) ? निश्चितरूप से: नहीं।
– क्या यह महान परमेश्वर के योग्य है कि वह हर वस्तु और अशुद्ध स्थानों में समाधानित हो? निश्चितरूप से: नहीं।

परमेश्वर का अपने प्राणियों एवं परिसंपत्तियों में समाधान के सिद्धांत से दुनिया की हर चीज़ को परमेश्वर मानना और उसकी पूजा करना लाज़िम आएगा और अधिक संक्षेप में कहा जाए तो निर्माता और जीव का अंतर खत्म हो जाएगा, वास्तव में यह सर्वशक्तिमान परमेशर का हक़ छीनना है (जो अपनी ईश्वरता में निराला है) और उसकी ईश्वरता में झगड़ा खड़ा करना है!

आएं हम इस बहस को दूसरे तरीके से समझने की कोशिश करते हैं:

– अल्लाह ने जिस मनुष्य को अक्ल की नेमत से नवाज़ा, सारी मख़लूक़ात पर प्राथमिकता दी और अफजल– उल–मख़लूक़ात बनाया क्या यह उसके योग्य है कि अपने से कमजोर वस्तु की पूजा करे (मूर्ति या जानवर ...) ऐसी चीज़ की पूजा करे जिसके पास ज़रा भी अक़्ल नहीं, जिसके पास अपने नफा नुकसान का भी ज्ञान नहीं और ना ही मृत्यु, ना जीवन, ना ही पुनरूत्थान का मालिक है।?

निश्चितरूप से: नहीं।

– अच्छा अगर कोई मनुष्य पूजा की जाने वाली समाधानित प्रतिमा को तोड़ दे तो क्या भगवन का देवत्व दो हिस्सों में बट जाएगा और उसका कुछ हिस्सा बट कर टूटे हुए हिस्से में चला जाएगा? निश्चितरूप से: नहीं।

– यदि किसी ने प्रतिमा को ध्वस्त कर दिया तोड़ दिया तो खुद प्रतिमा अपनी रक्षा करने में सक्षम नहीं हुआ और खुद को मुसीबत से नहीं बचा सका फिर उस भगवन का क्या होगा जिसके बारे सोचा जाता है की वह प्रतिमा के अंदर समाधानित

है? क्या भगवान उसके अंदर समाधानित रहेगा या उससे अलग हो जाएगा? और गर यह समझा जाता है कि भगवान उस ध्वस्त प्रतिमा के अंदर समाधानित है तो फिर क्यों प्रतिमा खुद को मुसीबत से नहीं बचा सका ?

–यदि कोई मनुष्य उस गाय की बलि करता है जिसकी पूजा की जाती है और जिसके बारे में कहा जाता है की इसके अंदर भगवान समाधानित है तो क्या उस दिव्यता में से कुछ उसके और कुछ बलि के बीच कनवर्ट हो जाता है? निश्चितरूप से: नहीं।

–और यदि गाय की बलि कर दी गई और वह खुद की रक्षा में सक्षम नहीं तो फिर उस भगवानों के बारे में क्या कहा जाएगा जिसके बारे कहा जाता है की वे गाय के अंदर समाधानित है? क्या भगवान उसके अंदर समाधानित रहेगा या उससे अलग हो जाएगा? और अगर यह कहा जाता है की बलि के बाद भी, शव में परिवर्तन होने के बाद भी भगवान गाय में समाधानित है तो फिर गाय को इस मुसीबत क्यों नहीं बचाया ?

क्या यह एक बुद्धिमान और अक्लमंद इंसान के योग्य है की किसी भी वस्तु की पूजा इसलिए करे की वह उपयोगी है निश्चितरूप से: नहीं। बल्कि बुद्धिमान मनुष्य इस योग्य है कि उस ईश्वर की इबादत करे जिस ने इन सारी चीजों का निर्माण किया है और उसमें लाभ रखा है और यह ईश्वर सर्वशक्तिमान अल्लाह है।

सर्वशक्तिमान अल्लाह का यह नियम है की उसने कोई भी चीज़ व्यर्थ नहीं बनाया, हर वस्तु जिसकी सृष्टि अल्लाह ने की है लाभदायक है यह अलग बात है की हम उसे पहचान नहीं सकते अथवा देख नहीं सकते पर यह पर्यावरण प्रणाली के संरक्षण में और संतुलित रखने में भूमिका निभाता है, इसलिए बेहतर यह है की सबब पैदा करने वाले निर्माता की पूजा की जाए ना की सबब की पूजा की जाए और वह सबब पैदा करने वाला भगवान अल्लाह सर्वशक्तिमान है और यह बात हर तर्कसंगत मन को स्वीकार्य है!

अंत में इस बिंदु पर भी एक चर्चा:

–भगवान क्यों किसी मनुष्य में समाधानित होगा वे तो भगवान द्वारा ही निर्मित हैं या फिर क्यों निर्मित मूर्तियों एवं गायों में समाधानित होगा?

– क्या भगवान को इस तरह के कार्य करने की जरूरत है? निश्चितरूप से: नहीं। सर्वशक्तिमान अल्लाह सारी सृष्टि से धनी है उसे किसी चीज़ में उनकी ज़रुरत नहीं बल्कि जीव को अपने निर्माता की जरूरत है!

–क्या इस जैसी बातों की थोड़ी सी भी सबूत है जिसे अक्ल (जिसे अल्लाह ने मनुष्य को प्रदान किया है) क़ुबूल करता हो? निश्चितरूप से: नहीं। यह एक भ्रम है और वास्तविकता से इसका कोई संबंध नहीं है।

–अगर कोई व्यक्ति अपने भगवान अपने निर्माता के निकट होना चाहता है उसकी पूजा करना चाहता है उसे पुकारना चाहता है तो इस बात की क्या आवश्यकता है की वह उसकी पत्थर अथवा उस जैसी विशिष्ट छवि में मूर्ति ख़रीदे या बनाए ताकि भगवान उसमें समाधानित हो सके या गायों में से किसी गाय की पूजा करे?

– क्या हम यह आस्था नहीं रखते की निर्माता भगवान स्वयं में, अनपी विशेषताओं में एवं अधिनियमों में महान हो, दोष और कमियां के लिए अथवा कुरूप निंदनीय कृत्यों के लिए उसे जिम्मेदार ठहराना उचित नहीं और फिर ईश्वर सर्वशक्तिमान से दोष और कमियां प्रकट नहीं होती?!

उत्तर: हां क्यों नहीं, यह तो हमारे लिए जरूरी है की सर्वशक्तिमान ईश्वर को हर उन चीजों से पवित्र रखें जो उसकी शान के योग्य नहीं और उसकी रचना एवं प्राणियों में से किसी में संघ एवं समाधान करने योग्य जैसी सिद्धांत से पवित्र रखें ताकि सर्वशक्तिमान ईश्वर की प्रतिष्ठा पर कोई आंच न आए!

****

(प्रश्न11) : हिन्दू: क्या आप जानते हैं की हिन्दू अनेक देवताओं के अधीन तीन प्रमुख देवताओं को आधार मानते हैं वे कहते हैं कि अनेक देवता वास्तव में 3 छवियों अथवा अभिभाव के रूप में एक ही भगवान है इस्लाम का इस बारे में क्या दृष्टिकोण हैं ?

(उत्तर 11) :मुस्लिम: सबसे पहले, मुझे पता है कि हिंदु तीन प्रमुख देवताओं की पूजा करते है, कुछ हिंदू 33 देवी देवताओं की कुछ 1000 देवी देवताओं की और कुछ हिंदू 330 मिलियन देवी देवता की पूजा करते हैं। और बहुत से हिन्दू अनेक देवी देवताओं को तीन प्रमुख देवताओं में विलय कर देते हैं या कहते हैं की अनेक देवता वास्तव में ३ छवियों के रूप में एक ही भगवान है! और यह इस प्रकार है:

भगवान ब्रह्मा:हिंदू आस्था के अनुसार,निर्माता – भगवान विष्णु: रक्षक– इसका मिशन दुनिया बनाए रखना है- भगवान शिव:विनाश और तबाही का देवता–वह दुनिया का विध्वंसक है इसका मिशन ठीक विष्णु के मिशन के विपरीत है! सारांश में रचना भगवान ब्रह्मा का मिशन है अन्य देवता इस काम में हस्तक्चेप नहीं करते इसी तरह अच्छाई भगवान विष्णु का मिशन है अन्य देवता इस काम में हस्तक्चेप नहीं करते और बुराई भगवान शिव का मिशन है अन्य देवता इस काम में हस्तक्चेप नहीं करते! इस तरह की आस्था के प्रति इस्लाम का दृष्टिकोण बिलकुल स्पस्ट है **पहला:** तीन अभिभाव या छवियाँ के भगवान का अस्तित्व वास्तव में तीन विभिन्न देवताओं में विश्वास रखना है ना की एक भगवान पर, उनमें से सभी के बारे यह आस्था रखा जाता है कि वे व्यक्तिगत रूप से एक दूसरे से अलग है उनके व्यक्तित्व दूसरे से स्वतंत्र है और उनका अपना अलग अलग भूमिका है फिर यह कहना कि तीनो देवता वास्तव में एक ही भगवान है यह तर्कसंगत और धर्म की आवश्यकताओं का स्पष्ट उल्लंघन है!

दूसरा: पांचवें प्रश्न के उत्तर में मैंने साक्ष्य से स्पष्ट कर दिया है की परमेश्वर (निर्माता, रक्षक, ब्रह्मांड का आयोजक) केवल एक ही है दो तीन या अधिक नहीं। जबकि इस्लाम का स्पष्ट सन्देश एक ऐसे ईश्वर में विश्वास का है जो अकेला ब्रह्मांड का आयोजक है उस जैसा कोई नहीं और सर्वशक्तिमान ईश्वर के इलावा कोई भगवान नहीं !

****

(प्रश्न12) : हिन्दू: आप जानते हैं कि हिंदू धर्म में एक सिद्धांत (अवतार) का है इसका मतलब है कि: मानव के रूप में भगवान का पृथ्वी में अवतरण हुआ है जो (कृष्णा) के चरित्र में सृजन का प्रतिनिधित्व करता है ताकि अपनी सृष्टि की परिस्थितियों से सचेत रहे और लोगों का शिक्षण एवं सुधार करे? इस बारे में इस्लाम का दृष्टिकोण क्या है?

(उत्तर 12) : मुस्लिम : हाँ, मुझे पता है विस्तार में इसका मतलब है कि: विष्णु (हिंदु जिसे रक्षक का नाम देते हैं और विश्व की रक्षा का उत्तरदायी मानते है) का अवतरण कृष्णा के मानव रूप में हुआ है (जिसका स्केच पशु चरवाहे की रूप में या मार्गदर्शक राजकुमार के रूपमें बनाया जाता है और यह कहा जाता है कि उसकी मृत्यु गलती से एक शिकारी के विषाक्त बाण लगने के कारण हुई, हिंदू धर्म में कृष्ण के बारे में विभिन्न अलग-अलग धारणाएं हैं लेकिन अंत में एक दिव्य अवतार पर सहमति हैं! इस तरह के आस्था के बारे में इस्लाम का विचार बिलकुल स्पस्ट है!

–इस्लाम का सन्देश सर्वशक्तिमान ईश्वर पर ईमान लाना है और उसकी बड़ाई, गुणों, बहुमुखी प्रतिभा और क्षमता पर ईमान लाना है, उसके व्यापक तथा पूर्ण इल्म ए ग़ैब (पूर्वज्ञान) पर ईमान लाना है, ईश्वर सर्वशक्तिमान समय या जगह के बारे सब कुछ जानता है (अतीत- वर्तमान- भविष्य) और सर्वशक्तिमान ईश्वर को यह आवश्यकता नहीं की अपनी निर्मित के बीच रहने के लिए उनके समाचार और स्थिति पता करने के लिए वह प्राणी का रूप धारण करे, और ऐसी बातें उसके योग्य नहीं !

– इस्लाम का सन्देश सर्वशक्तिमान ईश्वर की पवित्रता और उसकी योग्यता पर ईमान लाना है सर्वशक्तिमान ईश्वर सारी खामियों और अज्ञानता से पवित्र है, और उन सारी बातों से पवित्र है जो मनुष्य के विचार में उसकी छमता और म्हणता की कमी का कल्पना पैदा करे कमजोर प्राणी का कल्पना पैदा करे और यह दावा करना कि भगवान मानव चरित्र में पृथ्वी में अवतरण लेता है ताकि सृष्टि की परिस्थितियों से सचेत रहे सर्वशक्तिमान ईश्वर की म्हणता में कमी का कल्पना पैदा करता है!

– इस्लाम का सन्देश सर्वशक्तिमान ईश्वर को दोष और बदनामी से पवित्र मानना है, मानव और अन्य प्राणियों के कार्यों और जरूरतों (जिसकी उसे आवश्यकता होती है) से पवित्र मानना है (आहार, पेय, शौच, नींद , आराम, शादी और प्रजनन ...., सर्वशक्तिमान ईश्वर इन सारी चीजों से पाक है!

वर्णन के लिए अधिक विस्तार में विचार:

–क्या यह सर्वशक्तिमान ईश्वर के योग्य है कि वह महिला के गर्भ में प्रवेश करने के लिए किसी आदमी का शुक्राणु बने, वहां मांस और खून के बीच रहे और फिर भ्रूण में परिवतिर्त होने तक एक अवस्था से दूसरी अवस्था में परिवर्तित होते रहे फिर भ्रूण से शिशु फिर बच्चा बने... एक इंसान की छवि में इंसान के रूप में उसके साथ सलूक किया जाए? निश्चित रूप से: नहीं, इसके और उसके के बीच कोई संबंध नहीं है देवत्व और मानवता के बीच बहुत अंतर है सर्वशक्तिमान ईश्वर तुच्छता नहीं करता है क्योंकि इससे वह देवत्व के गुणों से खाली हो जाएगा! –क्या मानवता और पशुता आपस में मिल सकता है निश्चित रूप से: नही

– क्या यह संभव है आदमी गाय या अन्यथा (विभिन्न प्रकार के जानवरों) के साथ संभोग स्वीकार करे और क्या यह संभव है जानवरों के साथ संभोग से आधा इंसान और आधा जानवर पैदा हो? निश्चित रूप से: नहीं। यह एक नैतिक पुनरोदय है और मानवता की बेइज़्ज़ती है जिसे सर्वशक्तिमान ईश्वर ने सबसे सम्माननीय बनाया है, मनुष्य जानवरों से उदात्त में महत्व और दर्जे में बेहतर है इस के बावजूद कि वे सभी सर्वशक्तिमान ईश्वर के जीव हैं!

-यदि मानव प्रकृति और पशुता प्रकृति दोनों अलग अलग है हालांकि दोनों जीव हैं तो यदि विषय सर्वशक्तिमान ईश्वर से सम्बन्धित हो तो क्या दृष्टि होगी?

क्या दिव्य प्रकृति का मानव प्रकृति के साथ अभिसरण सम्भव है (कमजोर प्राणी जो अपनी मां के योनी से जन्म लेता है और जिसे ऊष्मायन और देखभाल की आवश्यकता होती है और मृत्यु के बाद अन्य प्राणियों की तरह दफना दिया जाता है) या फिर अन्य के साथ अभिसरण सम्भव है ताकि मानव प्रकृति या अन्य परमात्मा का अवतार बने?

निश्चित रूप से नहीं।, यह भगवान के लिए गाली, अपमानित करना, और उसकी इज़्ज़त कम करना समझा जाएगा !

इसी कारन इस्लाम का सन्देश ईश्वर को खामियों और तुच्छता से पवित्र मानना है सर्वशक्तिमान ईश्वर एक ही परमेश्वर है जो अभिन्न है न उसने किसी को जना न उसको किसी ने जना उसका कोई बराबर, समरूप या अनुरूप नहीं!

****

(प्रश्न13) : हिन्दू: हिंदुओं का कहना है कि हम राम और कृष्ण की पूजा के मध्यम से भगवान की पूजा करते हैं क्योंकि वे भगवान के मार्गदर्शक हैं और उन्होंने हमें भगवान का रास्ता बताया, इस संबंध में इस्लाम का दृष्टिकोण क्या है?

(उत्तर13) : मुस्लिम: **<u>प्रथम:</u>** यह कि: मुझे पता है कि हिंदु कहते हैं कि वे जब मानव रूप में सन्निहित भगवान की पूजा करते हैं तो इसका मतलब वे सर्वशक्तिमान ईश्वर की पूजा लेते हैं न की मानव रूप की, और पिछले जवाब में मैंने इसे स्पष्ट रूप से बताया है कि इस्लाम का सन्देश भगवन को उन सारी बातों से पवित्र रखना है जो की उसके योग्य नहीं और फिर सर्वशक्तिमान ईश्वर त्रुटि और अप्रासंगिक से बेनियाज है!

वह बेनियाज है इससे की कोई अपनी सोच से एक कमजोर प्राणी मनुष्य के रूप में भवगान की छवि बनाकर उसकी क्षमता, शान और दर्जा में कमी पैदा करे, इस दावे के साथ कि भवगान इस प्रकार अपनी रचना की परिस्थितियों से परिचित रहता है और उसकी शिक्षा एवं मार्गदर्शन करता है,

यह सारी बातें या इसके इलावा जिसकी उल्लेख मैं ने पलहे भी की है सर्वशक्तिमान ईश्वर के लायक नहीं है!

<u>दूसरा:</u> (प्रश्न) इस्लाम में यह स्पष्ट है की ईश्वर ने बहुत से नबी और दूत भेजा है ताकि वे लोगों को ईश्वर पर ईमान लाने के लिए आमंत्रित करें एवं उनका मार्गदर्शन और गाइडेंस करें उन्हें एक ईश्वर की परिचय कराएं उसकी महान गुणों और क्षमता से अवगत कराएं इत्यादि... परमेश्वर की ओर से जो उदात्त शिक्षा वे लेकर आएं हैं लोगों को बताएं ताकि लोग अपने जीवन में उसे विधि बनाएं, परंतु क्या यह संभव है कि भविष्यद्वक्ताओं और मैसेंजर्स की पूजा की जाए इस कारण की वे लोगें के मार्गदर्शक और हिदायत के सबब हैं?

निश्चित रूप से: नहीं, यह सर्वशक्तिमान ईश्वर के साथ शिर्क है उसके साथ किसी को शरीक बनाना है (जैसा कि मैंने पहले भी स्पष्ट किया है) और यह भविष्यद्वक्ताओं और मैसेंजर्स की मूलभूत संदेश के विपरीत है! और यह सन्देश: एक ही परमेश्वर में विश्वास का सन्देश है और वह परमेश्वर सर्वशक्तिमान है!

तीसरा: मानव जाति में भगवान का औतार जैसी विचार इस्लाम कदापि स्वीकार नहीं कर सकता क्योंकि यह ईश्वर के जिस्म होने के सिद्धांत की ओर और कई मनुष्यों की दिव्यता की ओर ले जाता है (जैसा कि विभिन्न समुदाय का मामला है, प्रत्येक अपनी अपनी इच्छा अनुसार) उन्हें मानव रूप में परमात्मा का अवतार समझकर पवित्र मानने और उसकी पूजा करने लगते हैं और यहीं से ईश्वर का साथी मानना अवश्य हो जाता है जो कि परमेश्वर के अधिकार में विवाद खड़ा करना है क्योंकि सर्वशक्तिमान ईश्वर का अकेले ईश्वर होना और अन्य मनुष्यों या जीव के बिना अकेले पूजा के योग्य होना परमेश्वर का विशिष्टता है!

****

(प्रश्न14) : हिन्दू: हिंदू, अपने मृत के शव जलाते हैं जबकि मुस्लिम मृत्यु के बाद मानव शरीर को जलाने के बजाय मिट्टी में दफनाते हैं, क्यों? और इस्लाम की दृष्टि में क्या सही है?

(उत्तर14) : मुस्लिम: सबसे पहले, मुसलमान सर्वशक्तिमान अल्लाह का आदेश लागू करते हुए मृतकों के शव दफनाते हैं जो कि अल्लाह ने अपने नबियों और रसूलों को इल्हाम के माध्यम से बताया है और उन्होंने ने इस तरीके से लोगों को सूचित और शिक्षित किया है,

आप जब दफनाए जाने के बारे में विधि एवं अवधि की शुद्धता पूछताछ करेंगे तो मैं इसे मानव संदर्भ तथा आर्थिक एवं वैज्ञानिक गंतव्य के हिसाब से स्पष्ट करूंगा:

क- मानव संदर्भ में: मौत के बाद शव को जलना ,जलने के बाद नदी में फेंक देना (गंगा हिंदू रीति-रिवाज के अनुसार) और कुत्तों, जंगली जानवरों एवं शिकारी पक्षियों के लिए खोराक बनाना (और तरंड बन जाने के बाद मौज का उसे किसी नदी के तट में ले जाना) उसे महत्वहीन और व्यवसायी शव बनाता है, जबकि इस्लाम मानव सम्मान को अधिक गंभीरता से लेता है चाहे वे जीवित हूँ या मृत, मृत्यु के बाद मानव शरीर को सम्मान और प्रशंसा की नज़र से देखा जाता है मानव शव का सम्मान करना इस्लाम की शिक्षाओं में से है ताकि उसे न्यूनतम नुकसान से भी बचाया जाए, उसे सम्मान के साथ कब्र में उतरा जाता है और फिर दफनाने के प्रावधानों के अधीन सम्मान के साथ दफनाया जाता है!

इसके अलावा यह कि मृत शवों को जलाने जैसे कठोर परिदृश्य देख मानव आत्मा को घृणा होती है और जलने के बाद उसे दुरुपयोग एवं कुत्तों, जंगली जानवरों एवं शिकारी पक्षियों के लिए खोराक के तोर पे छोड़ दिया जाता है!

ख- आर्थिक संदर्भ में: मृतकों के शव जलाने के लिए उच्च लागत दर कार है जैसे की प्राकृतिक संसाधनों की बर्बादी (पेड़ और पौधों से ,,,. जलाने की प्रक्रिया में खास प्रकार की लकड़ी का प्रयोग किया जाता है) जबकि मानव शव को मिट्टी में दफनाने में कोई लगत नहीं होती!

ग- वैज्ञानिक बिंदु से: मानव शव को जलाने से पर्यावरण प्रणाली असंतुलित होती है तथा संक्रमण के प्रसार एवं महामारि रोगों का कारण होता है (नदियों और बारिश के पानी में प्रदूषण के कारण...)

और इससे मानव, जानवरों और पेड़ पौधों को नुकसान हो सकता है जबकि मानव शरीर को मिट्टी में दफ़नाने से इस तरह को कोई खतरा नहीं रहता!

इस्लामी विधान में मृत्यु के बाद मानव शरीर को जलाने के बजाय मिट्टी में दफ़नाने की हिकमत यहीं से प्रदर्शित होती है!

****

(प्रश्न15) : हिन्दू: आप जानते हैं कि हिंदू धर्म में एक सिद्धांत (पुनर्जन्म) का है जिसका मतलब है मृत्यु के बाद मनुष्य की आत्मा एक दूसरे शरीर में हस्तांतरण हो जाती है? इस संबंध में इस्लाम का दृष्टिकोण क्या है?

(उत्तर15) : मुस्लिम: हाँ, मुझे पता है कि हिंदू धर्म में पुनर्जन्म का सिद्धांत है विस्तार में इसका मतलब है: मृत्यु के बाद मनुष्य की आत्मा का एक और शरीर में वापस हो जाना चाहे वह मनुष्य का शरीर हो या जानवर का (जैसे पशु, कुत्ता और सूअर ..) या फिर कीड़ों, पेड़ों अथवा निर्जीव वस्तुओं में से किसी में वापस हो जाना... और यह दुनिया में अपने अच्छे बुरे काम के फलस्वरूप दंडित या पुरस्कृत करने के लिए है यदि उस ने अच्छा काम किया है तो जिस शरीर में हस्तांतरण होगा आराम करेगा और अगर बुरा काम किया है तो दंडित किया जाएगा!

पुनर्जन्म सिद्धांत का सारांश (हिंदू धर्म के अनुसार):

क – सिद्धांत (कर्म) : जुर्माना और सजा का कानून, इसका मतलब है: पापी की आत्मा किसी बुरे शरीर में हस्तांतरण करके अभिशापित एवं दण्डित किया जाएगा!

ख– सिद्धांत (निर्वाण): इसका मतलब है: आत्माओं का पुनर्जन्म चक्र से मुक्ति (जिसमें आत्मा एक शरीर से दूसरी शरीर में हस्तांतरण होता रहता है) यानी पिछले सत्र से वैधता प्राप्त करके निर्वाण हो जाता है जिसका अर्थ है कि आत्मा परमेश्वर से एकजुट हो जाता है ।

इस संबंध में इस्लामी सिद्धांत बिलकुल ही स्पष्ट है:

इस्लाम का सन्देश अंतिम दिवस के अस्तित्व पर ईमान लाना है उस दिन संपूर्ण प्राणी को मौत के बाद दोबारा जिंदा किया जाएगा सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा आत्मा को फिर से उसके मालिक के शरीर में वापस कर दिया जाएगा फिर सभों का हिसाब होगा अच्छा करने के लिए महान इनाम से पुरस्कृत किया जाएगा (अनन्त में अनुग्रहित जीवन) और बुराई करने वालों को गंभीर सजा होगी (शैतानी जीवन) इसी वजह से मनुष्य अच्छे कर्म की चेस्टा करता है नैतिकता, मूल्यों और सिद्धांतों का पालन करता है विपरीत एव बुरा और अश्लील कार्य छोड़ देता है! और जो कुछ मैं ने बताया इससे साफ मालूम होता हैं कि इस्लाम में पुनर्जन्म की आस्था अस्वीकृति है और आत्मा का परमेश्वर से एकजुट या विलय होने के विरोधी है! और इस की पुष्टि निम्नलिखित उत्तर से भी होती है जो इस महत्वपूर्ण प्रश्न के उत्तर में इस्लाम ने दिया है ताकि मामला बिलकुल स्पष्ट हो जाए:

यदि हम प्रश्न करें कि क्या मानव में से कोई अपने पिछले जीवन के बारे कुछ महसूस करता है जो की उसने दूसरे शरीर में इस जीवन से पहले गुजारी है (हिंदू धर्म के आस्था अनुसार)? इसके बारे में किसी को कुछ भी याद है?

अच्छा जवाब में अत्यधिक विश्वसनीयता के लिए इस प्रश्न को हम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनुष्यों की अलग अलग गैर-हिंदु जातियों से पूछते हैं (विभिन्न यूरोपीय देशों से, अफ्रीका, उत्तर और दक्षिण अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, एशिया)।

इसके बावजूद हमें कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिल रहा है जिसे इस तरह के जीवन का होश हो और इस से इस बात की पुष्टि होती है कि पुनर्जन्म केवल अवास्तविक भ्रम है और यह बिलकुल निराधार। यदि इस जवाब को नए प्रकार से लिया जाए और मान लिया जाए कि कई मनुष्यों के लिए नया जन्म है तो फिर इस बात की आवश्यकता नहीं है की हर इंसान की पिछली ज़िंदगी हो और जिसका उसे होश भी हो! और साफ़ जाहिर है कि किसी भी मनुष्य का पुनर्जन्म के बारे कुछ भी याद ना होना इस बात की दलील है कि पुनर्जन्म अमान्य है और इस से प्राणी आत्मा का निर्माता ईश्वर के साथ सांघित होने के दावे का खंडन होता है!

– इस के इलावा यदि इस बात को मान लिया जाए की मृत्यु के बाद मनुष्य का आत्मा पशु में हस्तांतरण हो जाता है (तो इसमें मानव लाभ क्या है) या पेड़ .. इत्यादि में हस्तांतरण हो जाता है जहाँ मनुष्य को पुन और पाप का बदला दिया जाता है तो यह पाप और गुनाह तर्क न करने के कारण से है तो क्या मनुष्य की उपयोगिता को देखते हुए जानवर और पेड़ की संख्या में व्रिद्धि की जाएगी! इसमें कोई शक नहीं कि यहाँ हिन्दू धर्म की आस्था और पाप छोड़ कर शिष्टाचार का पालन करने के दावे में अंतर्विरोध है!

– और यह कि अगर इस बात को मान लिया जाए की पाप की सजा के तोर पे मृत्यु का बाद मनुष्य का आत्मा गरीब, बीमार और दोषी लोगों में हस्तांतरित हो जाता है तो इस से गरीब, बीमार और दोषी लोगों इत्यादि में बुरा विचार पैदा होता है वे यह समझते हैं की उसकी बुरी हालात पिछले जनम में पाप करने की वजह से है! निसंदेह यह नैतिक, मानवीय और मानसिक दृष्टि से अस्वीकार्य है!

मैं नैतिक, मानवीय और मानसिक पक्ष से स्वीकार्य विषयों में और इस्लामिक सन्देश में पूर्ण सहमति देखता हूँ अंतिम दिन पर ईमान लाने का दावा जिस दिन सभी प्राणी को मृत्यु के बाद हिसाब किताब के लिए पुनः जीवित किया जाएगा ,अच्छे कर्म उच्च मूल्यों और सिद्धांतों का पालन और नैतिकता के लिए उत्साहित करता है (जिसमे दूसरों के बारे में अच्छे विचार रखना और बुरा ना सोचना शामिल है) और विपरीत बुरा और अश्लील कार्य से रोकता है!

****

(प्रश्न 16) : हिन्दू: अंतिम दिन पर ईमान लाने के इस्लामी सन्देश जिस दिन प्राणी को मृत्यु के बाद दोबारा जीवित किया जाएगा में क्या हिकमत है?

(उत्तर 16) : मुस्लिम: सबसे पहले, अंतिम दिन के अस्तित्व का ज्ञान जिस दिन प्राणी को मृत्यु के बाद पुनः जीवित किया जाएगा ताकि उसे अच्छे काम के बदले महान इनाम से पुरस्कृत किया जाए (स्वर्ग में नेमत और स्थायी निवासी) और बुराई करने के लिए सजा दी जाए (नरक, जिसमे दर्दनाक पीड़ा है)

अच्छे कर्म उच्च मूल्यों और सिद्धांतों का पालन और नैतिकता के लिए उत्साहित करता है और विपरीत बुरा और अश्लील कार्य से रोकता है इस दिन (अंतिम दिन) के आयोजन हेतु लोगों को जवाबदेह आयोजित किया जाएगा, परमेश्वर की हिकमत यह है कि लोगों को अच्छे कर्मों उच्च मूल्यों और सिद्धांतों एवं नैतिकता के लिए उत्साहित किया जाए अगर पेनाल्टी के लिए आख़िरत का दिन ना हो तो फिर सिद्धांत और नैतिकता का तार्किक कारण भी नहीं पाया जाएगा (जैसे सच्चाई और ईमानदारी) अगर इसका पालन नहीं किया जाए तो सांसारिक हितों का विरोध होगा अर्थात: मनुष्य अच्छे कर्म उच्च मूल्य सिद्धांत और नैतिकता का पालन ईश्वर से पुरस्कृत होने की इच्छा उसकी सजा के डर से और आख़िरत में ईश्वर से ईमान की उम्मीद में करता है (हालांकि कई बार इसे पालन करने से उसके दुनयावी हितों का नुकसान होता है)!

– यदि कोई मनुष्य हजारों लोगों की मौत का कारण बना है तो उसे कैसे जवाबदेह बनाया जाएगा और इन लोगों का बदला उस से कैसे लिया जाएगा अगर आख़िरत और क़ियामत का दिन ना हो?

सांसारिक जीवन में उसे जवाबदेह नहीं ठहराया जा सकता इस दुनिया में उसके लिए अधिकतम दंड (मृत्यु) है जोकि केवल एक मानव जीवन का दंड है जिसका उसने क़तल किया था और बाकी उन लोगों के पनिशमेंट का क्या होगा जिसे उसने क़त्ल किया है और जिसका उस से पनिशमेंट नहीं लिया गया?!

एक और उदाहरण: यदि एक आदमी किसी दूसरे इंसान का जीवन बचाने के लिए (दूसरे के बचाव में) खुद को प्रस्तुत करता है तो नैतिक रूप यह व्यवहार अच्छा और प्रशंसनीय है, यहाँ एक प्रश्न उठता है:

क्या किसी इंसान का संस्कारी होना ही काफी है की वह मानव हित में दूसरे की जान बचने के लिए खुद को क़त्ल के लिए पेश कर दे?

अर्थात: क्या यह तर्कसंगत है कि मनुष्य दूसरे की जान बचाने के लिए अपनी जीवन दाव पे लगा दे ताकि वह केवल संस्कारी हो सके अच्छा यह महान काम जो उसने किया है इस शिष्टाचार का कोई बदला उसे नहीं दिया जाएगा, या आदमी खुद अपनी जीवन इस आशा में निछावर कर दे की ईश्वर की तरफ से इसका हिसाब होगा और ईश्वर से इसका इनाम मिलेगा? क्या यह सारी बातें इसलिए है कि ईश्वर ने लोगों को अच्छे काम के लिए उभारा है और कियामत के दिन ईश्वर इसका उसे (जिस दिन लोग हिसाब के लिए उठाए जाएंगें) पुरस्कार और स्वर्ग का इनाम देगा अगर उस ने यह काम सर्वशक्तिमान के लिए और उसकी ताज़ीम के लिए किया है ?

निस्संदेह तार्किक जवाब यह होगा कि: ईश्वर ने जिन बातों के लिए मनुष्य को उभारा है मनुष्य आशाजनक उसके पालन का चेस्टा करता है ताकि कियामत के दिन ईश्वर की तरफ से इनाम पा सके!

और जो कुछ भी मैंने स्पष्टीकरण किया है उस से यह समझ में आता है कि एक दिन हर इंसान को अपने किये का प्रतिफल मिलेगा अगर किसी ने किसी को क़त्ल किया है या तकलीफ पहुंचाया है तो वह अपने किये का सजा पाएगा और अगर किसी ने अच्छा काम किया है तो उसके लिए उसे पारितोषिक किया जाएगा!

और यहीं से मालूम होता है कि इस दिन (कियामत) को जी उठने हिसाब और बदले का दिन बनाने में परमेश्वर की क्या हिकमत है और कियामत के दिन पर ईमान लाने का जो इस्लामी सन्देश है उसकी विश्वसनीयता भी बढ़ जाती है!

****

(प्रश्न 17) : हिन्दू: क्या आप जानते हैं कि हिन्दू धर्म के अनुसार समाज चार अलग अलग परतों में विभाजित है? इस संबंध में इस्लाम का दृष्टिकोण क्या है?

(उत्तर17) : मुस्लिम: हाँ: मुझे पता है, उसकी चर्चा विस्तार से:

हिंदू धर्म में समाज चार विभिन्न परतों में विभाजित है उच्चतम वर्ग को (ब्राह्मण) जबके निचले वर्ग को (शूद्र) कहा जाता है, शूद्र अछूत हैं और केवल उच्चतम वर्ग की सेवा के लिए पैदा किये गए हैं, हिंदू धर्म का दावा है कि {1}ब्राह्मण परत (पुजारी, विद्वान और शिक्षक) भगवान के सिर से पैदा किये गए हैं,

{2}क्षत्रिय परत (शासक, योद्धा और प्रशासक) भगवान के हाथ से पैदा किये गए हैं {3}वैश्य परत (चरवाहे, किसान, कारीगर और व्यापारी) भगवान के जांघ से पैदा किये गए हैं, {4}और शूद्र परत (मजदूर और सेवा प्रदाता) भगवान के पैर से पैदा किये गए हैं, इनमें से प्रत्येक का समाज में अपना वर्ग और अपनी जगह है लेनदेन और शादी इत्यादि में उन के बीच अंतर है!

इसका उदाहरण: प्रारंभिक तीन परतों का आपस में एक दूसरे से शादी की अनुमति है लेकिन उन्हें चौथी परत से शादी करने की अनुमति नहीं है, ठीक इसी तरह चौथी परत (शूद्र) को उनमें से शीर्ष तीन वर्गों से शादी करने की अनुमति नहीं है!

इस्लाम की दृष्टिकोण बताने से पहले स्पष्टीकरण:

प्रथम: वर्ग और व्यक्तियों और समूहों के बीच नस्लीय भेदभाव निर्वासित हैं इस से समाज के विभिन्न वर्गों के बीच नफरत का प्रसार होता है जिससे समाज का विभाजन होता है और समाज में अस्थिरता होती है ।

इस्लाम समाज और समुदायों में व्यक्तियों और समूहों के बीच वर्गीय मतभेद दूर करने और अच्छाई, पुण्य, सामाजिक एकता और स्थिरता बनाए रखने के लिए आया है!

यह स्पष्ट है की इस्लाम में किसी भी मानव जाति के बीच कोई अंतर नहीं है और ना ही एक क़ौम का दूसरे क़ौम, राष्ट्र और अन्य के बीच कोई अंतर है!

हर कोई सर्वशक्तिमान ईश्वर के निकट एक जैसा है क्योंकि सर्वशक्तिमान ने ही सब को पैदा किया है ईश्वर के निकट किसी व्यक्ति को किसी वियक्ति पर प्राथमिकता

नहीं परंतु ईमान, ईश्वर भक्ति और अच्छे कर्मों से, जिस कारण पृथ्वी का अच्छी तरह से पुनर्निर्माण होता है और भूमि पर भ्रष्टाचार की कमी होती है!

पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, ने फ़रमाया:

" لا فضل لعربي على عجمي ، ولا لعجمي على عربي ، ولا لأبيض على أسود ، ولا لأسود على أبيض – : إلا بالتقوى ، الناس من آدم ، وآدم من تراب "

" किसी अरबी को किसी अजामी (ग़ैर अरबी) पर कोई प्राथमिकता नहीं है और किसी अजामी को किसी अरबी पर कोई प्राथमिकता नहीं है और ना किसी गोरे को काले पर और ना किसी काले को गोरे पर लेकिन केवल ईश्वर भक्ति से, लोग आदम से है और आदम मिट्टी से "! (अहमद द्वारा वर्णित)

इस्लाम देशों और लोगों को एकजुट करने के लिए आया है अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है :

" يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ"

"ऐ लोगों हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हें शाख़ें और क़बीले किया कि आपस में पहचान रखो बेशक अल्लाह के यहाँ तुम में ज़्यादा ईज़्ज़त वाला वह जो तुम में ज़्यादा परहेज़गार हैं बेशक अल्लाह जानने वाला ख़बरदार है" [सूरए हुजुरात 13]

<u>दूसरा:</u> यह स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म और अन्य धर्मों की जाती व्यवस्था में बड़ा अंतर है अन्य धर्मों की जाती व्यवस्था में सुधार किया जा सकता है जबकि हिन्दू धर्म में सुधार नहीं किया जा सकता क्योंकि हिन्दू धर्म में इसे दैवीय और ईश्वरीय ठहराया गया है हिंदू धर्म से जाती व्यवस्था हटाने के लिए स्वयं को हिन्दू धर्म से स्वतंत्र करना होगा और इसी से यह बात मालूम होती है की जाती व्यवस्था को भगवान से जोड़ कर भगवान को भी अन्याय और नस्लवाद से जोड़ दिया गया है!

और फिर यह प्रश्न उठता है: कि क्या यह संभव है कि भगवान अन्यायपूर्ण और नस्लवाद हो? क्या यह हो सकता है कि भगवान को अन्याय और नस्लवाद के चरित्र से जोड़ा जाए ?

जवाब: हरगिज़ नहीं सर्वशक्तिमान ईश्वर सत्य न्याय और अच्छे गुणों वाला है जिसे कोई नुकसान उत्पन्न नहीं होता !

- इसलिए, इस्लाम अन्याय और नस्लवाद से निर्माता भगवान को पाक होने की दावत देता है सर्वशक्तिमान केवल किसी खास व्यक्तियों, समूहों, जनता, राष्ट्र का ईश्वर नहीं वह सर्वशक्तिमान सारे संसारों का ईश्वर है वह सारे लोगों को स्वीकार करता हैं (यदि इस पर ईमान लाए और उसका अनुपालन करे) और तौबा करे तो वह माफ़ कर देता है और उनके लिए स्वर्ग का द्वार खोल देता है!

बल्कि उन्हें स्वर्ग में प्रवेश देता है और उन से राज़ी हो जाता है वह सर्वशक्तिमान सच्चा परमेश्वर है वह अपने बन्दों पे कुछ जुल्म नहीं करता सर्वशक्तिमान अल्लाह के निकट सब बराबर है और किसी को किसी पे प्राथमिकता नहीं लेकिन अल्लाह और निर्माता पे ईमान, ईश्वर भक्ति और अच्छे काम द्वारा सर्वशक्तिमान अल्लाह के निकट सर्वशक्तिमान प्राप्त किया जा सकता है!

और जो कुछ भी मैंने ज़िक्र किया इससे इस्लाम में नस्लवाद को निषेध करने एवं विभिन्न व्यक्तियों समूहों और समुदायों में वर्ग के मतभेद दूर करने की हिकमत का पता चलता है!

मुस्लिम: अब विस्तृत उत्तर देने के बाद निम्नलिखित कुछ महत्वपूर्ण सवाल और अंतर्निहित उत्तर आपके समक्ष रखना चाहता हूँ:

(1) क्या सर्वशक्तिमान भगवान इनसान आदमी और अन्य प्राणियों का सृष्टिकर्ता नहीं है, क्या वह उनका मुहाफिज़ नहीं और क्या वह अकेला ही इस ब्रह्मांड का मालिक नहीं है ?! उत्तर: क्यों नहीं।

(2) क्या सर्वशक्तिमान ईश्वर अकेला ही मनुष्य को बेशुमार नेमत से नहीं नवाज़ा उत्तर: क्यों नहीं ?!

(3) क्या सर्वशक्तिमान ईश्वर के कुदरत में इनाम और सजा नहीं है ?!

उत्तर: क्यों नहीं।

(4) तो क्या इसके बाद अल्लाह के साथ किसी को उसकी इबादत या उलूहियत में शरीक ठहराने की अनुमति है?

उत्तर: बिलकुल नहीं, सर्वशक्तिमान ईश्वर एक ही परमेश्वर है जिस ने मनुष्य को सारी नेमतों से नवाज़ा, उसी के दस्ते क़ुदरत में इनाम और सजा है, सिर्फ सर्वशक्तिमान ईश्वर ही इबादत के लायक है!

(5) इन दोनों में से व्यापक दिमाग के करीब कौन सा है: कई देवताओं के अस्तित्व में विश्वास विभिन्न चित्रों में भगवान का चित्रण और विभिन्न देवताओं का विभिन्न तरीके से पूजा (विभिन्न देवताओं के पत्थरों की विभिन्न मूर्तियां) अन्यथा छवियाँ सूर्य की श्रद्धा और पूजा और ग्रहों, विभिन्न जानवरों गायों और पेड़ों ... की श्रद्धा और पूजा अवमानना को कम करता है? या सर्वशक्तिमान अल्लाह की एकता में विश्वास और फिर लोगों का एकजुट होकर एक भगवान की पूजा और प्रार्थना कमियों और खामियों एवं कुरूप कृत्यों से सर्वशक्तिमान को पाक मानना और उसकी श्रद्धा और पूजा?

उत्तर: इसमें कोई शक नहीं है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह की एकता में विश्वास और लोगों का एकजुट होकर एक भगवान की पूजा और प्रार्थना करना कमियों और खामियों एवं कुरूप कृत्यों से सर्वशक्तिमान को पाक मानना और उसकी श्रद्धा और पूजा करना थोड़ी सी भी विपक्षी के बिना व्यापक दिमाग के करीब है!

(6) इन दोनों में से शुद्ध वृत्ति और शुद्ध आत्म की तरफ किस का झुकाव है: बहुदेववादी विश्वास और पूजा की विशिष्ट तरीका में अंतर और अभाव विपरीत? या सर्वशक्तिमान अल्लाह की एकता में विश्वास और लोगों का एकजुट होकर एक ही रूपात्मकता में एक ही ईश्वर की पूजा?

उत्तर: निस्संदेह शुद्ध वृत्ति और शुद्ध आत्म का झुकाव सर्वशक्तिमान अल्लाह की एकता में विश्वास और लोगों का एकजुट होकर एक ही रूपात्मकता में एक ही ईश्वर की पूजा की तरफ है !

इन प्रश्नों और उत्तरों के बाद आप को जानने के लिए काफी है कि यदि आप हिन्दू ग्रन्थों का अध्ययन करेंगे तो आप पाएंगे कि एक ईश्वर (सर्वशक्तिमान ईश्वर) में विश्वास करने और उसके के साथ शिर्क ना करने का इस्लाम के मूल संदेश में हिन्दू ग्रन्थों का संगत है इसी तरह छवियों और मूर्तियों के रूप में भगवान का चित्रण अनिष्ट है!

और यह इस्लाम के मुताबिक है, ईश्वर सर्वशक्तिमान फरमाता है:

[قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ (١) اللَّهُ الصَّمَدُ (٢) لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ (٣) وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ (٤)] (سورة الإخلاص:١-٤)

" ऐ नबी आप फरमा दीजिये," वह अल्लाह है जो यकता है, अल्लाह निरपेक्ष (और सर्वाधार) है, उसके औलाद नहीं, और न वह किसी का औलाद है, और न कोई उसके बराबर का है" {अल-इखलास:1-4}

और फिर पता चलता है कि ईश्वर के साथ अन्य देवताओं के अस्तित्व में विश्वास उसकी मूर्तियां इख़तियार करना और उसकी पूजा करना है हिन्दू ग्रंथों की शिक्षा और इस्लाम के विपरीत है!

इसके अतिरिक्त अंतिम समय में पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सभी नबियों और दूतों का अंतिम बनकर आने का उपदेश हिंदू धार्मिक किताबों में मौजूद है!

****

(प्रश्न) : हिन्दू: आप ने अपनी बातचीत में कहा कि पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सभी नबियों और दूतों का अंतिम बनकर आने का उपदेश हिंदू धार्मिक किताबों में मौजूद है, क्या आपको इस बारे में पूर्ण विशवास है? और यह क्या है?

(मुस्लिम) : निश्चित रूप से हाँ, यह कई स्थानों में है, और मैं पहले इसे स्पष्ट करना चाहता हूँ:

ईश्वर सर्वशक्तिमान क्रमिक अवधि में समय समय पर अपने नबियों और दूतों को विभिन्न देशों और लोगों के लिए भेजता है ताकि नबी और दूत अपने लोगों की विशेष रूप से हिदायत कर सकें, अंतिम मिशन को छोड़कर जिसमें हज़रत मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आए कि वह सभी लोगों के लिए हर जगह और हर समय के लिए नबी हैं क्योंकि यह निष्कर्ष संदेश है, इसलिए, पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबियों और रसूलों में अंतिम पैगंबर हैं!

इसके अलावा यदि पिछली किताबों की बताई हुई बातें क़ुरान करीम से मेल खाती हैं तो हम उसका विश्वास करते हैं और अगर पिछली किताबों की बताई हुई बातें क़ुरान करीम से असंगत हैं तो हम उसका विश्वास नहीं करते हैं इसके इलावा जिसका कुरान करीम और हदीस शरीफ में उल्लेख नहीं है हम ना उसका विश्वास करते है और ना ही उसे झुठलाते हैं !

और अंतिम समय में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगमन की बहुत सी स्पष्ट भविष्यवाणियां मौजूद हैं जिसमें हिन्दू ग्रंथ भी शामिल हैं:

1- भविष्यवाणी (नराशंस) हिंदुओं के चार पुस्तकों में से प्रत्येक में इस का ज़िक्र मौजूद है ((ऋग्वेद- यजुर्वेद- सामवेद- अथर्ववेद))

नराशंस दो शब्दों से मिलकर बना है: पहला शब्द (नर) है, जिसका अर्थ है: पुरुष - दूसरा शब्द (आशंस), जिसका अर्थ है: "प्रशंसित"

ज्ञात यह हुआ कि जिस व्यक्तित्व को प्रशंसा के लिए चुना गया है वह व्यक्ति प्रशंसित होगा और मनुष्य की जाति से होगा, और यह विदित है कि पैगंबर का नाम "मोहम्मद" (हमद) से लिया गया है, जिसका अर्थ है: "प्रशंसित मनुष्य और यह सब अच्छी तरह से जानते हैं कि पैगंबर का दूसरा नाम "अहमद" है और यह "मुहम्मद" नाम का पर्याय है

और मोहम्मद नाम भी (हमद) से लिया गया है जिसका अर्थ है: प्रशंसित मनुष्य! अर्थात नराशंस का अरबी अनुवाद मुहम्मद होता है!

और अगर इसके अलावा कहीं और पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी नहीं होती तो स्पष्टता एवं स्पष्टवादिता के लिए केवल यही काफी था परंतु नराशंस के विवरण अनुसार बहुत सारि जगहों पे पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगमन की भविष्यवाणियां मौजूद हैं! जैसे कि:

ऋग्वेद: ((मण्डल: 1/ सूक्त 106 संख्या: 4))

ऋग्वेद: ((मण्डल: 5/ सूक्त 5 संख्या: 2))

2- हिन्दू ग्रंथों में (कल्कि) नाम से उल्लेखित अंतिम मैसेंजर एवं सभी पूर्व पैग़म्बरों के अंतिम के गुणों का वक्तव्य:

अंतिम मैसेंजर और उसकी विशेषताओं की भविष्यवाणी ग्रंथों में:

((किताब :कल्कि पुराण / खंड:2 / संख्या: 4,5,7,11,15))

–पुस्तक में कहा है कि उनके माता का नाम (सुमति) होगा और संस्कृत में इस शब्द का अर्थ: शांति और सुरक्षा है

और यह ज्ञात है कि पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की माँ का नाम: (अमीना) है जिसका अर्थ: शांति और सुरक्षा है !

–(किताब में) यह उल्लेखित है कि उनके पिता का नाम (विष्णुयश) होगा और शब्द (विष्णु) का अर्थ है: भगवान और शब्द (यश) का अर्थ है: गुलाम, अरबी भाषा में इस का अर्थ है: (अब्दुल्ला) और यह पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पिता का नाम है!

–(किताब में) उल्लेखित है कि वह शांति और सुरक्षा के देश में पैदा होगा और यह ज्ञात है कि पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जन्मस्थान: (मक्का) है, और (मक्का) को संरक्षक देश कहा जाता है, क्योंकि यह शांति और सुरक्षा का एक देश है।

–(किताब में) उल्लेखित है कि वह सार्वभौमिक उपदेशक होगा, और यही वर्णन कुरान में भी पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में आया है, ईश्वर सर्वशक्तिमान फरमाता है:

{ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا } (سورة الأحزاب:٤٥)

" ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) बेशक हमने तुम्हें भेजा हाज़िर नाज़िर और खुशख़बरी देता और डर सुनाता " [सूरए अहज़ाब:45]

–(किताब में) उल्लेखित है कि उसे पर्वत पर रहस्योद्घाटन (इलहाम) प्राप्त होगा और पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नूर पर्वत पर (इलहाम) रहस्योद्घाटन प्राप्त हुआ

–(किताब में) उल्लेखित है कि वह उत्तर की ओर पलायन करेगा और फिर वापस आ जाएगा और यह सब को ज्ञात है कि पैगंबर मुहम्मद (मक्का) से (मदीना) उत्तर की ओर हिजरत किये थे और फिर विजय के दिन मक्का लौट आए।

और फिर यह स्पष्ट हो जाता है कि यह बशारतें मैसेंजर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ विशेष है!

3– और कई स्थानों में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनके दूसरे नाम "अहमद" के साथ उल्लेख किया गया है "अहमद" का अर्थ है: ईश्वर का प्रशंसक, उल्लेखित सथानो में से कुछ का जिक्र !

– ऋग्वेद: ((मण्डल: 8/ सूक्त 6 संख्या:10))

और इसके इलावा भी बहुत सी बशारतें हैं जिस का हम पहले भी ज़िक्र कर चुके हैं जो अंतिम समय में नबियों के अंतिम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगमन की भविष्वाणी करती हैं!

****

(प्रश्न): हिन्दू: इस्लाम में भगवान की विशेषताएं क्या हैं

(उत्तर) : मुस्लिम: इस्लाम धर्म का सन्देश भगवान के अच्छे गुणों उसकी महानता एवं सुंदरता पे ईमान लाना है और यह सारे गुण अच्छे ,पूर्णता और सम्मानता के गुण हैं इसमें कोई कमी नहीं आती और यह सिर्फ एक ही ईश्वर के योग्य है (जिसका कोई साथी नहीं है) जिसके दस्ते कुदरत में सृजन, रचना और संरक्षण है। और जिसके दस्ते कुदरत में अकेले सारी चीजों का इख़्तियार है और यह भगवान सर्वशक्तिमान है !

–सर्वशक्तिमान ईश्वर की विशेषताओं में से कुछ का विवरण:

सनातन: इसका मतलब यह है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर पहला है उस से पहले कोई नहीं और अंतिम है उसके बाद कोई नहीं वह ना सोता है और ना ही अनदेखी करता है वह जिंदा है उसे मौत नहीं आती जगह तथा ज़माने के अंत होने से उसका अंत नहीं होता वही जगह और समय का निर्माता है!

– योग्यता: इसका मतलब यह है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान पूर्ण शक्ति का मालिक है, सर्वशक्तिमान सब कुछ करने में सक्षम है, वह अगर कुछ करने का इच्छा करता है तो उस से कहता है कि हो जा और वह चीज़ हो जाती है, और सर्वशक्तिमान ईश्वर की छमता पर दलालत करने वाली आसार बेशुमार है (रचना में वह ब्रह्मांड का निर्माता है जिसमें मानव सहित मौजूदात और जीव सभी शामिल हैं और रचनात्मकता में आत्मा, मन, दिल और जटिल आंतरिक व्यवस्था सहित... अन्यथा सब शामिल है) !

– विद्या: इसका मतलब यह है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान सब कुछ जानने वाला है उसका ज्ञान जगह और समय हर चीज़ को इहाता किये हुए है (अतीत- वर्तमान- भविष्य) वह सर्वशक्तिमान ईश्वर एक अकेला, निर्माता और अनस्तित्व से सारी चीजों को अस्तित्व में लेन वाला है!

– बुद्धिमत्ता: इसका मतलब यह है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान बुद्धिमान है और उसकी बुद्धि महान एवं पूर्ण है !

– इरादा: इसका मतलब यह है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान जो कुछ भी चाहता है करता है और यह उसके इनाम और न्याय के रूप में है क्योंकि वह हर चीज़ का जानने वाला कमाल और हिकमत वाला है!

– क्षमा, करुणा और उदारता: इसका मतलब यह है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान क्षमा, करुणा और उदारता पसंद करता है यदि कोई बन्दा अपने पाप और चूक की पश्चाताप करता है ईश्वर पर ईमान लाता है उसकी आज्ञा का पालन करता है तो वह अपने बन्दों की पाप और चूक माफ कर देता है उसे अपनी रज़ामंदी से नवाज़ता है और उसके लिए जन्नत के दरवाज़े खोल देता है जन्नत जहाँ ढेर सारे नेमत हैं और जहाँ हमेशा हमेशा के लिए रहना है!

– सत्य और न्याय: इसका मतलब यह है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान सत्य और न्याय पसंद करता है और अपने बन्दों पे ज़र्रा बराबर भी अत्याचार नहीं करता और ना ही उनके बीच अंतर करता है, मानव जाति में किसी के बीच कोई फर्क नहीं है और इश्वर के निकट किसी को भी किसी दूसरे पे प्राथमिकता नहीं है परंतु ईश्वर भक्ति, ईमान एवं अच्छे कर्मों से!

और एक की ग़लती दूसरे पे ग्रहण नहीं किया जा सकता यद्यपि वे माता पिता ही क्यों ना हों , हर आदमी खुद के लिए जिम्मेदार है, अगर कोई ज़र्रा बराबर भी

अच्छा काम करता है तो उसका इनाम कयामत के दिन पाएगा (उस दिन लोगों को मौत के बाद दुनिया में उनके कार्यों के जवाब देही के लिए और कार्य अनुसार भुगतान के लिए दोबारा ज़िंदा किया जाएगा) और जो ज़र्रा बराबर भी बुरा काम करेगा उसे उसका जवाबदेह आयोजित किया जाएगा !

– शांति: सर्वशक्तिमान ईश्वर शांति पसंद करता है और अपने बन्दों को जमीन पर शांति स्थापित करने का आदेश देता है, शांति स्थापित करने के कारण को इख़्तियार करने का आदेश देता है और उन्हें अन्याय और अत्याचार से मना फरमाता है इसी तरह शांति और सुरक्षा स्थापित हो सकती है, और सार्वजनिक रूप से इस्लाम में ग्रीटिंग के ज्ञान को पहचानने की आवश्यकता है, इस्लाम में ग्रीटिंग शांति है इस अर्थ में कि ग्रीटिंग करने वाला कहता है (तुम पर शांति हो) और उत्तर देना वाला कहता है (तुम पर शांति हो) इस से सुरक्षा और विश्वास का भाव पैदा होता है!

और इस्लाम में यह स्पष्ट आया है कि पूर्णता में, सुंदरता में, प्रतिष्ठा में, महानता में, ताकत में, प्रवाह की क्षमता में, ज्ञान की क्षमता में, और कमाले हिकमत में.. और अन्य ईश्वर की अच्छी सिफ़तों में सर्वशक्तिमान अल्लाह के तरह कोई भी नहीं!

****

(प्रश्न) : हिन्दू: कुरान पाक पर ईमान लाना क्यों जरूरी है (अंतिम आसमानी किताब के रूप में)?

(उत्तर) : मुस्लिम: इसका कारण यह है कि कुरान सचची और पवित्र किताब है उसकी सच्चाई और पवित्रता का सबूत निम्न है:

– पवित्र कुरान की शिक्षा सर्वशक्तिमान ईश्वर में शुद्ध विश्वास पे शामिल है (जो संक्षिप्तता में आसानी के लिए सूचीबद्ध है) और खालिस दावत एवं मार्गदर्शक पूजा पे शामिल है (जो आत्मा को अनैतिकता की चरित्र से बलन्दी, नवीनीकरण, संस्तुति एवं पवित्रता की अनुदेश देता है) जो सही विधान, उच्च शिक्षा, अच्छा मार्गदर्शन का अनुदेश देता है जिस से मानव जीवन ईश्वर के बताए हुए तरीके पर स्थापित होता है (सर्वशक्तिमान ईश्वर) जिसके द्वारा सम्पूर्ण समस्याओं का समाधान होता है और यह सब पवित्र क़ुरान की शैली की सुंदरता, संगठित ढंग से पिरोया हुआ, महान वाग्मिता, शब्दों की सटीकता, संपूर्ण कवरेज एवं भव्यता के कारण है,

और यह सब इस तरीके से है कि मनुष्य उस जैसा एक सूरत भी लाने में असमर्थ हैं (पवित्र कुरान की सूरत जैसा)।

-2 पवित्र कुरान और हदीस शरीफ ने प्रभावशाली वैज्ञानिक तथ्यों की खबर 1400 से भी अधिक वर्षों पहले दी है (आकाश , पृथ्वी, पहाड़, समुद्र, मानव, पशु, पक्षी और पौधा में) विशेष रूप से सृजन के मामले में, और ऐसे समय में जब किसी को इसके बारे में थोड़ी भी जानकारी नहीं थी , फिर उसकी प्रामाणिकता और विश्वसनीयता की खोज के लिए एडवांस्ड तकनीक के साथ आधुनिक विज्ञान आया जिस से इस बात की गवाही मिल गई कि यह किताब (पवित्र कुरान) सर्वशक्तिमान ईश्वर का शब्द है और जिसमे कोई कमी नहीं आती !

सृजन , ब्रह्मांड के उद्गम एवं ईश्वर द्वारा आकाश और पृथ्वी बनाने से सम्बंधित वैज्ञानिक तथ्यों का उदाहरण इसी प्रकार भ्रूण की रचना और इसके विकास के चरणों का उदाहरण:

पहला उदाहरण: सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता है:

أَوَلَمْ يَرَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا ۖ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۖ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ (٣٠)

(سورة الأنبياء – الآية ٣٠)

(क्या काफ़िरों ने यह ख़याल न किया कि आसमान और ज़मीन बन्द थे तो हमने उन्हें खोला और हमने हर जानदार चीज़ पानी से बनाई तो क्या वो ईमान लाएंगे) [सूरए अंबिया: 30] !

"كانتا رتقا" "बन्द थे" का अर्थ:

" बन्द थे " का अर्थ: संयुक्त आपस में जुड़े, यानि आसमान और ज़मीन दोनों आपस में जुड़े थे, अलग नहीं थे!

" ففتقناهما " " खोला " का अर्थ:

" खोला " का अर्थ: उन्हें अलग किया, यानि आसमान और ज़मीन को संयुक्त के बाद अलग कर दिया!

पवित्र कुरान की आयतें बताती हैं कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना कैसे की और (सर्वशक्तिमान ने) उनके निर्माण का प्रारंभ कैसे किया, और

पवित्र कुरान की आयतें सर्वशक्तिमान ईश्वर की बड़ी सृष्टि और इस बहुप्रशंसित ब्रह्मांड के निर्माण की प्रारंभिक कैफियत में विचार एवं चिंतन की दावत देती है, ताकि अपने निर्माता को पहचान सकें और उस पे उसके महान गुणों पे उसकी बहुमुखी प्रतिभा और क्षमता पे ईमान ला सकें !

पवित्र कुरान की आयत ने हमें बताया है कि आकाश और पृथ्वी पहले आपस में एक चीज़ की तरह मिले हुए थे क़ुरान की आयात है " आसमान और ज़मीन बन्द थे " फिर उन दोनों को अलग किया गया क़ुरान की आयात है " हमने उन्हें खोला " !

आधुनिक विज्ञान की खोज ने वैज्ञानिक तथ्य से पवित्र कुरान की आयतों की सच्चाई का पता लगाया और पवित्र कुरान की सच्चाई इस आधुनिक युग के वैज्ञानिकों पे साबित हो गया और फिर यहीं से **(महान विस्फोट)** के सिद्धांत की बुनियाद पड़ी यह इस आधुनिक युग में प्रचलित सिद्धांत है और यह सब ब्रह्मांड के विस्तार और फैलाव की खोज के बाद हुआ है।

सिद्धांत **(महान विस्फोट)** कहता है: आज जब ब्रह्मांड एक दूसरे से दूर हो रहा है तो अवश्य किसी दिन संमिलित था और अगर हम इन आकाशगंगाओं के विपरीत दिशा से आज दूर हो रहे दिशा में पाठ्यक्रम की कल्पना करते हैं

तो ज्ञात होता है कि यह एक-दूसरे के करीब से गश्त कर रहे हैं और कुल आकाशगंगाओं के घटक आकार के बराबर एक टुकड़ा मालूम होते हैं (एक दूसरे से जुड़ा हुआ भगवान के शब्द के मुताबिक " आसमान और ज़मीन बन्द थे") !

और भौतिक विज्ञानियों का कहना है कि: जब यह आकाशगंगा एक दूसरे के करीब होते हैं और एक दूसरे में मिल जाते हैं तो उसके खंड में बड़े पैमाने पर वृद्धि हो जाती है और उसके आकर्षण की तीव्रता अधिक हो जाती है और चोली दामन का साथ हो जाता है (भगवान के शब्द के मुताबिक" आसमान और ज़मीन बन्द थे"), और सितारों से मिला गठित आकाशगंगाओं के बीच का रिक्त स्थान गायब हो जाता है, फिर खुद सितारों पर गुरुत्वाकर्षण दबाव बढ़ जाता है और इसी तरह दबाव जारी रहता है यहां तक कि ब्रह्मांड के घटक सामग्री परमाणु आकार में परिवर्तित हो जाता है फिर दबाव जारी रहता है यहां तक कि जितना संभव हो यह एटम छोटा से छोटा होता जाता है फिर विस्फोट हो जाता है **(भगवान के शब्द के मुताबिक** " तो हमने उन्हें खोला" **)** और इस अत्यधिक एटम के पार्ट्स अत्यधिक

दबाव और विशाल ऊर्जा के साथ रेडिएशन के रूप में फैल जाता है और ठंडा होना शुरू हो जाता है और उससे धीरे-धीरे आकाश और पृथ्वी का प्रशंसित ब्रह्मांड का निर्माण होता है!

पवित्र कुरान के शब्द सटीकता और सुवक्ता से कितना भरपूर है?!! और यह किस चीज़ पे इंगित करता है?!!

निश्चित रूप से, यह पवित्र कुरान की विश्वसनीयता पर इंगित करता है, और यह परमेश्वर की ओर से अपने सच्चे नबी नबियों और रसूलों के अंतिम हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पे प्रगट इलहाम है!

****

दूसरा उदाहरण: सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता है:

[ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ...] (سورة فصلت – الآية١١)

परमेश्वर फरमाता है: (फिर आसमान की तरफ़ क़स्द फ़रमाया और वह धुंआ था)
[सूरए फुस्सीलत:११]

इस आयात में कहा गया है कि प्रारंभ में आकाश एक धुआं था फिर ईश्वर सर्वशक्तिमान ने उसे आकाश बनाया ! और आधुनिक विज्ञान पहली ब्रह्मांडीय धुआं के चित्र खींचने की क्रिया में सक्षम हो गया कि यह सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा ब्रह्मांड के उद्भव की शुरुआत में महान विस्फोट के परिणामस्वरूप है जैसा कि कथित ब्रह्मांड के बाहरी हिस्से में उसकी पुरातात्विक अवशेष पाए गए जो इस बात की पुष्टि करता है कि प्रारंभ में आकाश एक धुआं था फिर ईश्वर सर्वशक्तिमान ने उसे आकाश बनाया जैसा कि भगवान के शब्द से मालूम होता है "फिर आसमान की तरफ़ क़स्द फ़रमाया और वह धुंआ था" !

पवित्र कुरान के शब्द सटीकता और सुवक्ता से कितना भरपूर है?!! और यह किस चीज़ पे इंगित करता है??

तीसरा उदाहरण: सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता है:

[وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِن بَنِي آدَمَ مِن ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ] (سورة الأعراف – الآية ١٧٢)

(जब तुम्हारे रब ने आदम की औलाद की पीठ से उनकी नस्ल निकाली और उन्हें ख़ुद उनपर गवाह किया) [सूरए अअराफ़:172]

पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

"إنَّ الله أَخَذَ الميثَاقَ مِنْ ظَهْرِ آدَمَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ ..فأخرج من صلبه كل ذرية ذرأها.. "

[رواه النسائي]

" परमेश्वर ने आदम {अलैहि वसल्लम} की पीठ से अनुबंध लिया है.. फिर उनके सुल्ब से प्रत्येक वंश को बाहर खींच लिया.." [वर्णनकर्ता अननेसाई]

उल्लेखित सूरा और हदीस शरीफ इस बात को स्पष्ट करती हैं कि हज़रत आदम के सभी वंश (जिन्हें अल्लाह ने सभी मनुष्यों के पहले पिता और प्रथम इंसान बनाया) उनकी सृष्टि के समय उनके सुल्ब में मौजूद थे!

आधुनिक विज्ञान ने क्रोमोसोमल एवं भ्रूण आनुवंशिक गुणसूत्र की भूमिका की खोज की है, और फिर भ्रूणविज्ञान के वैज्ञानिकों ने साबित किया है कि अग्रिम से ही मनुष्य की रचना अपने माता पिता के शुक्राणु से पूर्वनिर्धारित होती है (निर्दिष्ट और स्पष्ट होती है) और यह विस्तार करता हुआ माता-पिता और दादा-दादी के जेनेटिक कोड द्वारा पिछले सदियों तक हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तक पहुँच जाता है (मनुष्य के पहले पिता), और यह आनुवंशिक कोड को उच्च सटीकता से क्रमादेशित किया है और यह गुणन कोशिकाओं से जीवित नाभिक कोशिका के अंदर मुड़ा हुआ है, इसका मतलब यह है कि: हज़रत आदम के बेटों के हर सदस्य उनकी रचना के समय अपने पिता आदम के जेनेटिक्स कोड में उपस्थित थे! और यहीं से उल्लेखित पवित्र क़ुरान की आयात और हदीस शरीफ से संगतता का प्रदर्शन होता है (इस बिंदु पर हम पूर्व बात कर चुके हैं) साथ साथ आधुनिक विज्ञान की खोज भी इस तक पहुंच चुकी है!

चौथा उदाहरण: सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता है:

(أَيَحْسَبُ الْإِنسَانُ أَن يُتْرَكَ سُدًى (٣٦) أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّن مَّنِيٍّ يُمْنَىٰ (٣٧))[سورة القيامة – الآية]

(क्या आदमी इस घमंड में है की आज़ाद छोड़ दिया जाएगा [36] किया वह एक बूंद न था उस मणि का कि गिराई जाए [37]) {सूरए कियामा ३६- ३७}

अर्थ "क्या आदमी इस घमंड में है की उसे आज़ाद छोड़ दिया जाएगा": क्या इंसान यह सोचता है की उसे बग़ैर किसी हिसाब किताब के भगवान के आदेश का पालन किये बगैर सर्वशक्तिमान ईश्वर के आदेश की आज्ञाकारिता और अवज्ञा के हिसाब किताब के बग़ैर आज़ाद छोड़ दिया जाएगा (इनाम या सजा) की अदायगी के बग़ैर आज़ाद छोड़ दिया जाएगा !

उत्तर, यह है कि: इंसान को सर्वशक्तिमान ईश्वर के आदेश की आज्ञाकारिता के बिना हरगिज़ आज़ाद नहीं छोड़ा जा सकता और हरगिज़ बिना हिसाब किताब के उसे आज़ाद नहीं छोड़ा जाएगा आज्ञाकारिता और अवज्ञा पर (इनाम या सजा) के बग़ैर आज़ाद नहीं छोड़ा जाएगा और परन्तु उस से प्रश्न किया जाएगा और जवाबदेह आयोजित किया जाएगा और जो कुछ उसने किया उसका बदला पाएगा तो जिस ने थोड़ा भी नेकी किया होगा उसे उसका इनाम और सवाब मिलेगा और जिस ने थोड़ा भी बुरा काम बुरा काम किया होगा तो उसे उसका जवाबदेह आयोजित किया जाएगा।

"نُطْفَةً""शुक्राणु" का अर्थ:

जल जो पुरुषों और महिलाओं के जन्म का कारण है !

"مَّنِيٍّ يُمْنَىٰ""गर्भ में शुक्राणु का बूंद" का अर्थ:

जल जो भ्रूण बनाने और जन्म का कारण हो!

यानी: मानव रचना का प्रारम्भ एक वीर्य से हुआ (आकार में बहुत छोटा) जिस में वह जल भी शामिल है जो जन्म का कारण है और इस पानी में बहुत सारे शुक्राणु होता है (शुक्राणु आदमी के पानी सहित)।

आधुनिक विज्ञान द्वारा सिद्ध बातें पवित्र कुरआन की आयत के अनुरूप है, पवित्र कुरआन की आयत संदर्भित करता है कि भ्रूण की रचना वीर्य के (अधिकतर- एक शुक्राणु)एक शुक्राणु से होता है, भगवान के शब्द के अनुसार "शुक्राणु" व्यक्तियों को संदर्भित करता है संग्रह को नहीं यानि भ्रूण की रचना वीर्य में से एक शुक्राणु से होता है सब से नहीं (वीर्य लाखों शुक्राणु को शामिल होता है) पवित्र क़ुरान ने बहुवचन (शुक्राणुओं) का उपयोग नहीं किया परंतु एकवचन का उपयोग किया है "शुक्राणु" अधिकतर गर्भावस्था एक शुक्राणु का महिला के जननांग कोशिका में एक अंडा से मिलकर होता है और इस अंडे का चयन अंडाशय के हजारों अण्डों के बीच होता है और यह शुक्राणु का अंडे से मिलकर होता है!

और यहीं से आधुनिक विज्ञान की खोज एवं पवित्र कुरआन की आयत में सहमति नज़र आती है जिस से पवित्र क़ुरान के शब्द की सटीकता ,सुवक्ता और आधुनिक विज्ञान के सिद्ध किये गए खोज से सहमति का पता चलता है!

पांचवां उदाहरण: सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता है:

(ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِن سُلَالَةٍ مِّن مَّاءٍ مَّهِينٍ)[سورة السجدة – الآية 8]

(फिर उसकी नस्ल रखी एक बे क़द्र पानी के ख़ुलासे से) [सूरए सज्दा:8]

"سُلَالَة ""शुक्राणु" का अर्थ:

वीर्य का सारांश, निकले हुए (चयनित) पानी का खुलासा जो प्रसव का कारन होता है, यह वही शुक्राणु है जिसे पिछली आयात ने स्पष्ट किया है (जिसका उल्लेख हम ने ऊपर दूसरे उदहारण में किया है) ।

आयते करीमा का अर्थ: मानव की पैदाइश की शुरुआत भ्रूण के रूप में शुक्राणु से (पानी के ख़ुलासे से) होती है (चयनित) निकले हुए पानी का खुलासा जो प्रसव का कारण बनता है!

आधुनिक विज्ञान ने यह साबित किया है कि शुक्राणु (आदमी के वीर्य का शुक्राणु) से भ्रूण की तख़लीक़ होती है और इसी से मानव वंशज फैलता है और यह पूरी तरह कुरान के मुताबिक है, पवित्र क़ुरान ने इस बात की तरफ इशारा शब्द "वंश" का प्रयोग करके किया है भगवान का शब्द "वंश" का निम्न में विवरण:

शब्द "वंश" अरबिक शब्द (सल्ला) से लिया गया है इसी कारन अरबिक में (आदमी के वीर्य को) शुक्राणु "सोलला" कहा जाता है "सोलला" का कई अर्थ है जो इस प्रकार है:

– तरल पदार्थ का छोटा भाग (आदमी का शुक्राणु) जिस में पैदाइश का पानी होता है (वीर्य) !

– और यह तरल पदार्थ का छोटा भाग जिस में पैदाइश का पानी होता है (वीर्य) एक लंबी मछली की तरह लगता है!

- और यह तरल पदार्थ का छोटा भाग जिस में पैदाइश का पानी होता है (वीर्य) हल्के ढंग से धीरे धीरे बाहर निकलता है!

आधुनिक विज्ञान ने खोज की है कि: शुक्राणु जिससे भ्रूण अमल में आता है (वीर्य) यह तरल पदार्थ का छोटा सा भाग है ! (एक शुक्राणु– अधिकतर रूप में – जिसकी वजाहत पवित्र क़ुरान की आयात ने भी की है और दूसरे उदहारण में जिसकी तरफ हम इशारा कर चुके हैं) इस का आकार (शुक्राणु का) एक लंबी मछली की तरह होता है

(शुक्राणु की लंबाई का आकर चौड़ाई की तुलना में अधिक होता है) और यह भाग (शुक्राणु) कई शुक्राणु के केंद्र से (वीर्य से) तैराकी करते हुए धीरे धीरे बाहर निकलता है और गर्भाशय स्ट्रेट के दौरान गर्भाधान में दाखिल हो जाता है !

और यह सब पवित्र क़ुरान द्वारा दी गई खबर के मुताबिक़ है जिसकी तरफ पवित्र क़ुरान ने 1400 से भी अधिक वर्षों से इशारा किया है, और एक ऐसे वक़्त में इस अद्भुत वैज्ञानिक तथ्यों की तरफ इशारा किया जब किसी को इसके बारे में थोड़ा भी ज्ञान नहीं था, और फिर यहीं से पवित्र क़ुरान और उसकी आयतों की सच्चाई का पता चलता है कि यह सर्वशक्तिमान ईश्वर की तरफ से नाज़िल किया हुआ इल्हाम है और फिर यहीं से नबीये पाक हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत और रिसालत की सच्चाई का इल्म होता है!

छठा उदाहरण: सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता है:

[إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ ...] (سورة الانسان – الآية ٢)

(बेशक हम ने आदमी को पैदा किया मिली हुई मानि से...) [सूरए इंसान:2]

"मिली हुई मानि" का अर्थ: मिश्रित शुक्राणु (पुरुष और महिला के वीर्य से)।

इमाम अहमद ने अपने मसनद में रिवायत की है, कि एक यहूदी ने पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा, और कहा: हे मुहम्मद, मानव को किस चीज से पैदा किया जाता है?

अल्लाह के दूत पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"يا يهودى من كل يخلق ، من نطفة الرجل و نطفة المرأة " {رواه احمد: ٤٤٢٤ }

" ऐ यहूदी! प्रत्येक पुरुषों और महिलाओं के शुक्राणु से पैदा होता है"

[अहमद द्वारा वर्णित: 4424]

कुरआन की आयत हमें स्पष्ट रूप से बताती है कि मानव जाति की पैदाइश केवल पुरुषों या केवल महिलाओं के शुक्राणु से नहीं होती बल्कि पुरुषों और महिलाओं दोनों के शुक्राणु से होती है , और पुरुषों एवं महिलाओं के शुक्राणु एक साथ मिलकर मानव जाति की पैदाइश होती है जैसा कि भगवान के शब्दों से स्पष्ट है: " मिली हुई मानि" यानी : मिश्रित शुक्राणु (पुरुष और महिला के वीर्य से)। और हदीस शरीफ में भी स्पष्ट रूप से आया है कि मानव जाति की पैदाइश पुरुषों एवं महिलाओं के मिश्रित शुक्राणु से होती है !

प्राचीन समय में यह माना जाता था और (18) अठारहवीं ईसवी सदी के अंत तक यह माना जाता था कि मानव शरीर - बचपन में परिमित आयाम से- मासिक रक्त से बनता है और मादा अंडे की खोज के बाद यह माना जाने लगा कि मानव शरीर अंडे के भीतर पूरी तरह से बनाता है,

और शुक्राणु की खोज के बाद यह माना जाने लगा कि मानव शरीर शुक्राणु के शीर्ष के अंदर पूरी तरह से बनाता है **लेकिन** समय बीतने और आधुनिक तकनीकी साधन में आश्चर्यजनक प्रगति के कारण आधुनिक विज्ञान ने यह खोज किया की यह सारे दावे गलत हैं और 1400 साल से अधिक पहले पवित्र क़ुरान की बताई हुई

प्रभावशाली वैज्ञानिक तथ्य सच्ची हैं और यह सब आधुनिक तकनीक के माध्यम से भ्रूण के निर्माण के चरणों को फिल्माए जाने के बाद हुआ !

आधुनिक विज्ञान के प्रभावशाली वैज्ञानिक खोजों एवं निष्कर्ष का संक्षेप निम्नलिखित है: –

– लाखों शुक्राणुओं में से सब गर्भाशय चैनल तक नहीं पहुँचते बल्कि केवल एक बहुत छोटी सी संख्या पहुंचती है जिनकी तादाद (500) से अधिक नहीं होती और इतना ही नहीं बल्कि मादा शुक्राणु में केवल एक ही लाभदायक (अधिकतर) शुक्राणु प्रवेश करता है (अंडा – यह केवल एक ही है –) ताकि गर्भधारण के लिए मादा वीर्य शुक्राणु से मिश्रित होकर एक शुक्राणु हो जाएं! और यह वही है जिसकी खबर पवित्र कुरआन की तीसरी आयत द्वारा दी गई है जैसा कि भगवान का शब्द है" मिली हुई मानि" यानि मिश्रित शुक्राणु (पुरुष और महिला के वीर्य से मिश्रित शुक्राणु), और जैसा की हदीस शरीफ में आया है ((प्रत्येक पुरुषों और महिलाओं के शुक्राणु से पैदा होता है))"!

- आयत में भगवान के शब्द "शुक्राणु" पर विचार करने से मालूम होता है कि यह एकवचन में आया है बहुवचन में नहीं – शुक्राणुओं –, क्योंकि मादा शुक्राणु में केवल एक ही लाभदायक (अधिकतर) शुक्राणु प्रवेश करता है (अंडा –यह केवल एक ही है–) ताकि एक दूसरे से मिश्रित होकर एक शुक्राणु हो जाएं,

और यही से पवित्र कुरान के शब्दों की सटीकता उसका कवरेज और आधुनिक विज्ञान से अनुकूलता का पता चलता है!

सातवाँ उदाहरण: सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता है:

[يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِنَ الْبَعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُضْغَةٍ مُخَلَّقَةٍ وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ .....] (سورة الحج – الآية ٥)

[ऐ लोगो अगर तुम्हें क़यामत के दिन जीने में कुछ शक हों तो यह ग़ौर करो कि हमने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से फिर पानी की बूंद से फिर ख़ून की फुटक से फिर गोश्त की बोटी से नक़शा बनी और बे बनी...] [सूरए हज]

" نُطْفَةٍ" "शुक्राणु" का अर्थ:

थोड़ा पानी जो पुरुषों और महिलाओं के प्रजनन का एक कारण है ! (भगवान के शब्द के रूप में: "मिली हुई मानि" यानी मिश्रित शुक्राणु (पुरुष और महिला के वीर्य से)।

"عَلَقَةٍ" "ख़ून की फुटक " का अर्थ:

गर्भाशय से संबंधित जमे हुए रक्त का टुकड़ा!

"مُضْغَةٍ" " गोश्त की बोटी " का अर्थ:

बोटी की तरह मांस का एक टुकड़ा!

"مُخَلَّقَةٍ وَغَيْرِ مُخَلَّقَة" "नक़शा बनी और बे बनी" का अर्थ:

यानी बोटी की तरह मांस का टुकड़ा इसका दो हिस्सा है पहला हिस्सा जिस में शरीर के कुछ अंगों को तैयार किया जा चूका है यह भगवान के शब्द "नक़शा बनी" का अर्थ है, दूसरे हिस्से जिस में कुछ भी तैयार नहीं किया गया और यह भगवान के शब्द " औ बे बनी" का अर्थ है!

सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता है:

{وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن سُلَالَةٍ مِّن طِينٍ (١٢) ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ (١٣) ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظَامًا فَكَسَوْنَا الْعِظَامَ لَحْمًا ثُمَّ أَنشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ ۚ فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ (١٤)}

[سورة المؤمنون – الآية ١٢-١٤]

(फिर, उसे पानी की बूंद किया एक मज़बूत ठहराव में फिर हमने उस पानी की बूंद को ख़ून की फुटक किया, फिर ख़ून की फुटक को गोश्त की बोटी फिर गोश्त की बोटी को हड्डियाँ, फिर उन हड्डियों पर गोश्त पहनाया, फिर उसे और सूरत में उठान दी तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह, सब से बेहतर बनाने वाला)

[सूरए मूमिनून:12-14]

" سُلَالَةٍ مِّن طِينٍ" "उसे पानी की बूंद किया एक मज़बूत ठहराव में" का अर्थ:

यानी हम ने आदम - सभी मनुष्यों के पिता- को मिट्टी से बनाया!

"نُطْفَةً" "शुक्राणु" का अर्थ:

थोड़ा पानी जो पुरुषों और महिलाओं के प्रजनन का एक कारण है (भगवान के शब्द के रूप में: "मिली हुई मानि" यानी मिश्रित शुक्राणु (पुरुष और महिला के वीर्य से)

"عَلَقَةً" " ख़ून की फुटक " का अर्थ:

गर्भाशय से संबंधित जमे हुए रक्त का टुकड़ा!

" مُضْغَةً " गोश्त की बोटी" का अर्थ: बोटी की तरह मांस का एक टुकड़ा!

सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता है:

[مَّا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا (١٣) وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا (١٤)] (سورة نوح – الآية ١٣-١٤)

(तुम्हें क्या हुआ अल्लाह से इज़्ज़त हासिल करने की उम्मीद नहीं करते [13] हालांकि उसने तुम्हें तरह तरह बनाया [14]) [सूरए नूह: १३-१४]!

" أَطْوَارًا" "तरह तरह बनाया " का अर्थ: विभिन्न चरणों में!

भ्रूण के निर्माण के चरणों को आधुनिक तकनीक के माध्यम से फिल्माने के बाद (जिसकी तरफ पवित्र क़ुरान ने पहले ही इशारा किया है और जैसा भगवान के शब्द में ज़ाहिर है "तरह तरह बनाया") युग्मक मिश्रित शुक्राणु को देखना मानव के लिए मुमकिन हो गया है, और फिर भ्रूण को गर्भाशय के अंदर जमे हुए रक्त के टुकड़े के रूप में देखना मुमकिन हो गया है भगवान के शब्द अनुसार " ख़ून की फुटक ", और फिर भ्रूण को मास या मिट्टी के टुकड़े के रूप में देखना सम्भव हो गे है जिसे दाढ़ के तहत रखा गया है इस स्तर पर भ्रूण जुगल की तरह लगता है भगवान के शब्द अनुसार " गोश्त की बोटी " और फिर इसके व्यंजनों को देखना सम्भव हो गया है और इसका दो भाग है पहला भाग जिस में शरीर के कुछ अंगों को तैयार किया जा चूका है यह भगवान के शब्द "नक़्शा बनी" का अर्थ है, दूसरे भाग जिस में कुछ भी तैयार नहीं किया गया है भगवान के शब्द "और बे बनी"

का अर्थ है, यानी कि अगर हम इस भ्रूण का वर्णन सिंथेटिक या गैर सिंथेटिक रूप में करें तो यह वर्णन गलत और अवैज्ञानिक होगा, लेकिन सही वैज्ञानिक विवरण भगवान के शब्द के रूप में कुरान ने कहा है " नक़्शा बनी और बे बनी गोश्त की बोटी " आप विचार कर सकते है कि पवित्र कुरान के शब्दों में कितनी सटीकता है ??

फिर आप हड्डी बनाने की अवस्था को देख सकते हैं भगवान के शब्द के रूप में " फिर गोश्त की बोटी को हड्डियाँ किया " फिर आप हड्डियों को मांस से कवर करने की अवस्था को देख सकते हैं भगवान के शब्द के रूप में " फिर उन हड्डियों पर गोश्त पहनाया " तब आप सृष्टि के अंतिम चरण को देख सकते हैं मानव भ्रूण का रूप इस स्तर पर सभी पिछले चरणों के रूप से अलग है मानव आकृति अन्य दूसरी दुनिया के भ्रूण से अलग होती है भगवान के शब्द के रूप में "फिर उसे और सूरत में उठान दी" ये भ्रूण (मनुष्य का निर्माण) के विकास के चरण हैं और इसी व्यवस्था में पवित्र कुरान ने संक्षिप्त शब्दों का प्रयोग करते हुए बड़ी सटीकता और आराध्य तरीके से भ्रूण के विकास के चरण को बताया है,

---

भ्रूण निर्माण के सभी चरणों को देखने के लिए डॉ. करीम नजीब की किताब: एजाजुल क़ुरान फिमा तखफ़ीह अल अरहाम की अध्ययन कर सकते हैं इसमें आधुनिक तकनीकों द्वारा फोटो लिया गया है और प्रत्येक चरण का समय स्पष्ठ किया गया है,

आप विचार कर सकते है कि पवित्र कुरान के शब्दों में कितनी सटीकता है और पवित्र क़ुरान और हदीस शरीफ ने 1400 से भी अधिक वर्षों पूर्व उन अविश्वसनीय वैज्ञानिक तथ्यों को बतया जिसकी खोज आज इस आधुनिक युग में तकनीकी विकास के बाद सम्भव हो सका है!!

इसमें कोई संदेह नहीं कि यह सब पवित्र क़ुरान की सच्ची और विश्वसनीयता को इंगित करता है और यह सर्वशक्तिमान ईश्वर की ओर से अपने सच्चे नबी पे नाज़िल की गई वही (इल्हाम) है!

और फिर भगवान के ज़रिये नाज़िल किये गए रूपरेखा में आज तक और क़यामत के दिन तक बिना किसी नुकसान और परिवर्तन के पवित्र कुरान की रक्षा होती रहेगी यह इस बात का सबूत है कि यह अल्लाह की किताब है और पिछली नाजिल की गई तमाम आसमानी किताबों का अंतिम है!

और इस चकाचौंध वैज्ञानिक तथ्यों की अधिक जानकारी के लिए जिसकी खबर पवित्र क़ुरान और हदीस शरीफ ने 1400 से भी अधिक वर्षों पूर्व ऐसे वक्त में दिया जब इस बारे में किसी को कुछ पता नहीं था आप निम्नलिखित किताबों से लाभ उठा सकते हैं! :

१- मीन आयात अल एजाज़ अल इल्मी (स्वर्ग, पृथ्वी, जानवर, पौधे) कुरान में,डॉ जगलूल नज्जार (अरबी संस्करण)

من آيات الإعجاز العلمي (السماء، الأرض، الحيوانات، النباتات) في القرآن الكريم، للدكتور/ زغلول النجار

२- अल अज्ज़ा १-२-३ लील एज़ाज़ अल इल्मी फि अल सुन्नाह अल नबविया, डॉ जगलूल नज्जार (अरबी संस्करण)

- الأجزاء ١-٢-٣ للإعجاز العلمي في السنة النبوية للدكتور/ زغلول النجار.

3- मौसूआ अल इस्लाम व इल्म अल हदीस अल एज़ाज़ अल इल्मी फि अल क़ुरान अल करीम - डॉ जगलूल नज्जार (अरबी संस्करण)

موسوعة الإسلام والعلم الحديث، الإعجاز العلمي في القرآن الكريم- للدكتور/ زغلول النجار.

4-किताब इल्म अल अजिन्न्ह फि जाव अल क़ुरान व सुन्नाह बिहैअत अल एजाज़ अल इल्मी लील क़ुरान व अल सुन्नाह बी मक्का अल मोकर्रमा

كتاب علم الأجنة في ضوء القرآن والسنة بهيئة الإعجاز العلمي للقرآن والسنة بمكة المكرمة.

5-एज़ाज़ अल क़ुरान फिमा तखफ़ीह अल अरहाम डॉ करीम नजीब अल अअज़

إعجاز القرآن فيما تخفيه الأرحام، للأستاذ/ كريم نجيب الأغر.

6- अल इस्लाम व मुक्तशफात अल इल्म अल हदीसक एहदा शवाहिद व दलाइल नबुव्वह व रिसालत मुहम्मद / प्रोफ़ेसर मुहम्मद अल सैय्यद मुहम्मद

الإسلام ومكتشفات العلم الحديث كإحدى شواهد ودلائل نبوة ورسالة محمد ، للأستاذ/ محمد السيد محمد

****

(प्रश्न) : हिन्दू: हमें इस्लाम के पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में विश्वास और उनकी दावत और रिसालत की तस्दीक़ करने की ज़रूरत क्यों है?

(उत्तर14) : मुस्लिम: पवित्र क़ुरान की सच्चाई और पवित्रता की गारंटी से सम्बंधित पिछले प्रश्नों के उत्तर में मैंने यह स्पष्ट किया था कि पवित्र क़ुरान पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पे नाजिल हुआ जिससे पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत और रिसालत की सच्चाई का ज्ञान होता है और मैं ने यह भी स्पष्ट किया था कि (पिछले प्रश्न के उत्तर में) हिन्दू शास्त्रों में पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अंतिम ज़माने में आगमन की साफ़ और स्पष्ट भविष्यवाणी मौजूद हैं।

मैं आपके लिए पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी और रसूल होने के सबूत में प्रमाण के साथ संक्षेप में कुछ उदाहरण बयान करता हूँ:

– शुद्ध आस्था और साफ सुथरी दावत जिसे पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लेकर आए और जिसे शुद्ध स्वभाव, पवित्र आत्मा और अच्छे मन ने स्वीकार किया है (जिसकी अभी ऊपर इशारा किया है) !

– पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का साहिबे अख़लाक़ और करीम सिफ़त होना जिसमें उनकी बातों की मिठास बातचीत में ताज़गी अच्छे मामलात ख़िल्क़त की सिफाते कमाल व जमाल और सम्मानित वंश से होना (वह अरबों में सब से ज़्यादा इज़्ज़त वाले घराने से थे) यह सब इस बात की दलील है कि अल्लाह सर्वशक्तिमान ने उन्हें (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को नबुव्वत व रिसालत के लिए चुन लिया है !

– पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इबादत दुनिया की सजावट से अनिच्छा एक भगवान की पूजा लोगों को भलाई पुण्य नैतिकता और रिश्तेदार के साथ भलाई का मामला करने की तरफ आमंत्रित करना और अपने मन को हमेशा अल्लाह सर्वशक्तिमान की स्मरण में व्यस्त रखना यह सब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी और रसूल होने की दलील है!

–आदमी के साथ दया करना भगवान के सभी प्राणियों के साथ करुणा करना और किसी भी कारन उन से जुड़े लोगों का बरकत हासिल करना यह सब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी और रसूल होने की दलील है!

- ईश्वर का उनकी प्रार्थना को कबूल कर उनका समर्थन करना हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी और रसूल होने की दलील है!

- मुजेज़ात और अलौकिक (जिसे अंबिया और रूसूल के इलावा कोई दूसरा नहीं कर सकता) द्वारा अल्लाह सर्वशक्तिमान का हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का समर्थन करना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी और रसूल होने की दलील है! इसमें महान मोजेज़ा (चमत्कार) भी शामिल है (कयामत के दिन तक जिसकी सुरक्षा का वादा खुद अल्लाह सर्वशक्तिमान ने लिया है) और वह: पिछली तमाम किताबों का अंतिम आसमानी किताब पवित्र क़ुरान है जो अल्लाह सर्वशक्तिमान के वादे से और अपने प्रतिबिंब प्रकाश से महफूज है जिस ने अपनी वाग्मिता से अर्थ की भव्यता से शब्दों की सटीक गठबंधन और बुन्याद से हर जगह और समय अरबों और दूसरों को अपने बलन्द लक्ष्यों और उद्देश्यों से चुनौती दे रखी है कि कोई भी पवित्र क़ुरान की तरह एक सूरत (एक-लाइन) लाकर देखाए लेकिन वे विफल रहे और चकाचौंध वैज्ञानिक तथ्यों को शामिल (पवित्र क़ुरान) ने जिसकी खबर 1400 से भी अधिक वर्षों पूर्व ऐसे वक्त में दिया जब इस बारे में किसी को कुछ पता नहीं था फिर आधुनिक विज्ञा इसकी शुद्धता और विश्वसनीयता का गवाह बनकर आता है ताकि यह साबित हो जाए कि पवित्र क़ुरान अल्लाह सर्वशक्तिमान के तरफ से वही (इल्हाम) है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के आखरी नबी हैं!

- इस्लाम के शत्रुओं द्वारा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह को मारने और नुकसान पहुँचाने की लगातार प्रयासों के बावजूद दावत व रिसालत की तबलीग़ के लिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह को भगवान की सुरक्षा, चालीस साल की उम्र में पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पे वही नाज़िल हुई और 63 वर्ष की उम्र में उनका निधन हुआ यानी उनकी रिसालत की अवधि 23 साल थी और यह अवधि बहुत सारे राष्ट्रपतियों और राजाओं के शासन अवधि के बराबर है!

लेकिन इस अवधि में पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शिर्क और पूत परस्ती को जड़ें से उखाड़ फेंका अल्लाह के अलावा दूसरे (ग़ैरूल्लाह) की पूजा को खत्म किया ईमान और तौहीद लोगों के दिलों में बिठाया और बिना किसी शिर्क के सिर्फ एक ईश्वर सर्वशक्तिमान की इबादत के लिए लोगों का अक़ीदा मजबूत किया, इसके इलावा अरब प्रायद्वीप से सभी भ्रष्ट प्रथा को उखाड़ फेंका, भगवान

का यह सब समर्थन इस बात पे गवाह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के नबी और रसूल हैं!

– पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जीवन शैली का सारांश:

हमेशा सोचते रहते, अधिकतर चुप रहते, बिना जरुरत बात नहीं करते, नरम मिज़ाज, स्वयं के लिए कभी भी क्रोधित नहीं होते, (भगवान के प्रतिषिद्ध के उल्लंघन से क्रोधित होते) आमतौर से उनकी हंसी मुस्कुराहट होती, अपने साथियों के साथ मजाक करते और सच के इलावा बात नहीं करते,

– पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिस्मानी विशेषताओं का सारांश:

खिलता रंग, पूर्णिमा की चाँद की तरह गोल सुर्ख माइल सफेद चेहरा, सुरमई आँखें (स्वाभाविक रूप से सुरमा लगाने की वजह से नहीं) बड़ी और सुर्ख डोरे वाली आँखें, पलकों के बाल आँखें की मिठास और सुंदरता को और अधिक बनाती, एक दूसरे से बिना जुड़े लंबी पतली भौं, चौड़ा माथा, पतली नाक, सुन्दर होंठ, दांतों के बीच अंतर – सामने के दांतों के बीच सुन्दर अंतर– अगर बात करते तो ऐसा लगता की दांतों के अंतर से नूर निकल रहा है, जब खुश होते तो चाँद के टुकड़े की तरह चेहरा चमकने लगता,

घने और कुछ घुमावदार काले बाल, गरदन चांदी की सुराही मानिंद, काली दाढ़ी केवल कुछ सफेद बाल (आयु के बाद),

सुसंगत शरीर, न ज़ियाद मोटा न दुबला न लम्बा और न ही छोटा, लेकिन लंबाई के निकटतम, छाती और पेट एक जैसा, (यानी: ऊंचाई में पेट और छाती), चौड़ी छाती, (खुद के लिए कभी नहीं गुस्सा होते बल्कि उनका क्रोध ईश्वर सर्वशक्तिमान के लिए था), रोशन बदन: अगर कभी शरीर का कुछ भाग खुल जाता (जैसे हज और उमरा के दरमियान कन्धा) तो सफेदी की सुंदरता से नूर की तरह नज़र आता, . . . इसके अलावा और भी पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अच्छी जिस्मानी विशेषताएं हैं!

****

(प्रश्न): हिन्दू: धर्म के रूप में इस्लाम का चयन क्यों करना चाहिए?

(उत्तर) : मुस्लिम: पूर्व के दो प्रश्नों के उत्तर में क़ुरान की सच्चाई एवं पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत की सच्चाई जैसा कि उनपर क़ुरान नाज़िल हुआ और दूसरे उदाहरण, सबूत और प्रमाण देकर स्पष्टीकरण के अलावा स्पष्ट करना चाहता हूँ कि:

* इस्लाम प्राकृतिक धर्म है और ईश्वर ने मनुष्य को इसी स्वभाव पर पैदा किया है यह एकेश्वरवाद धर्म है जो सर्वशक्तिमान निर्माता भगवान में आस्था और उसे एक ईश्वर मानने के लिए निमंत्रण करता है मानव मन प्रति अटकलें सोच और उसे जवाब दिए जाने की जरूरत इन सारी बातों का प्रारूपिक तार्किक जवाब अग्रिम में गुज़र चुका है!

* केवल इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो भगवान के सभी नबियों और रसूलों पर ईमान लाने, उनकी इज़्ज़त और शान बढ़ाने, उनके बीच भेदभाव ना करने के लिए आमंत्रित करता है और सभी नबियों रसूलों पे ईमान लाना उनकी इज़्ज़त और शान बढ़ाना उनकी संदेश (रिसालत) की पुष्टि करना ज़रूरी है और इन संदेशों के अंतिम सन्देश पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का संदेश है जो इस्लाम धर्म लेकर आए!

* आसमानी किताब (पवित्र क़ुरान) जो इस्लाम लेकर आया केवल एक ऐसी किताब है जिसकी हानि या विरूपण से सुरक्षा की ज़िम्मदारी सर्वशक्तिमान ईश्वर ने लिया है यह इस कारण है कि पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई दूसरा नबी या रसूल नहीं और पवित्र क़ुरान के बाद कोई दूसरी आसमानी किताब नहीं यह एक ऐसी किताब है जिसपे पिछली सभी आसमानी किताबें संपन्न हो जाती हैं जो अपने प्रतिबिंब प्रकाश से भगवान के वादे के मुताबिक महफ़ूज़ है और मानवता की सारी जरूरतों को शामिल है ताकि मनुष्य दुनिया और आख़िरत में अपना जीवन कामयाब कर सके, पवित्र कुरान शामिल हैं:

क- बिना किसी अशुद्धि और टेढ़ेपन के सही और साफ सुथरा विश्वास

ख- सभी मानव जीवन की कामयाबी के लिए सीधा कानून

ग- मार्गदर्शन पूजा जिससे मनुष्य की आत्मा बुराइयों से शुद्ध होकर एहसान के ऊंची प्रतिष्ठा पर आसीन हो!

घ- अच्छे संस्कार और सभ्य लेनदेन

ङ- उन्नति प्रगति और सभ्यता के लिए उच्च शिक्षा

च- विभिन्न वैज्ञानिक क्षेत्रों में बहुत सारे लौकिक विज्ञान के कई और विभिन्न संकेत ताकि यह संकेत विज्ञान के रास्ते में आगे बढ़ने और स्थानांतरित करने का एक माध्यम हो!

छ- उच्च मार्गदर्शन के माध्यम से विभिन्न प्रकार के समस्याओं का हल जिसका सामना इंसान अतीत और वर्तमान से करता रहा है!

इसलिए इस्लाम द्वारा लाई गई ईश्वर की अंतिम किताब (पवित्र कुरान) पर ईमान लाना और धर्म के रूप में इस्लाम का चयन करना आवश्यक है

* इस्लाम की उदारता: इस्लाम की उदारता इस्लाम के सन्देश से स्पष्ट है इस्लाम का सन्देश शुद्ध विश्वास साफ सुथरा अक़ीदा एक ईश्वर पे विश्वास रखना उसकी बड़ाई बयान करना कमी दोष और अपमानजनक चरित्र से सर्वशक्तिमान को पाक रखना अक़ीदे में उदारता एवं मध्यस्थता इख़्तियार करना है तमान नबीयों पे ईमान लाना उनकी इज़्ज़त और मर्तबे को बलन्द करना है (क्योंकि वे वह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने अपना सन्देश लोगों तक पहुचाने के लिए चुना है) !

इस्लाम का उदारता विधान और पूजा के कृत्यों में मध्यस्थता इख़्तियार करने के सन्देश से भी स्पष्ट है ताकि कोई भी व्यक्ति अपनी ताकत और हैसियत से ज़्याद बोझ न उठाए और जिसे करने की ताक़त नहीं रखता उस पे बोझ न बन जाए और हर काम में मध्यस्थता जैसे भोजन, पेय, और फालतू खर्च. . . , शरीर और आत्मा का अधिकार और आवश्यकताओं को लिए मध्यस्थता, और यह पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपने सहाबी हज़रत सलमान की बात का अनुसमर्थन करने से स्पष्ट है - अबू दर्दा से रिवायत हैं "बेशक तुम्हारे ईश्वर का तुम पे हक़ है और तुम्हारी जान का तुम पे हक़ है और तुम्हारे परिवार का तुम पे हक़ है इसलिए प्रत्येक को उसका अधिकार दो"

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "सलमान ने सच कहा" [बुखारी ने रिवायत की, एक लंबी हदीस से]

इस्लाम धर्म ऐसा धर्म है जो दुनिया और आख़िरत के बीच संतुलन क़याम करता है और प्रत्येक का अधिकार देता है!

इस लिए ज़रूरी है की इस्लाम धर्म को अपनाया जाए और यह ठोस सबूत की बुनियाद पे कि इस्लाम धर्म अल्लाह सर्वशक्तिमान का सच्चा धर्म है!

मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि: आदमी को चाहिए कि (आम तौर पर) सच्चाई की तलाश करें और जब भी जहां भी इसकी साक्ष्य सबूत और विश्वसनीयता हासिल हो इसका अनुसरण करें समुदाय में प्रचलित विश्वास पर डटे रहना ठीक नहीं दरअसल समुदाय के सदस्यों द्वारा चली आ रही लंबी प्रथा लोगों के दिलों में घर कर जाती है और पूर्वजों (माता पिता और दादा दादी) की मुखालफत की इच्छा न होने की वजह से लोग खुद को उसी विश्वास पर बाकी रखते हैं खासकर जब लोगों को पता भी चल जाता है की यह विश्वास अपंग हैं सच्चाई और सही ईमान इसके इलावा है फिर भी थोड़ी सी भी प्रामाणिकता और सबूत के बिना वे पूर्वजों से प्रचलित अपंग विश्वास से हटना नहीं चाहते !

भ्रम अनुमान और अन्धविश्वास की बुनियाद पे ऐसे विश्वास और आस्था को स्वीकार करना जिसकी प्रामाणिकता की थोड़ी सी भी सबूत न हो खासकर अगर वे तर्कसंगत के विपरीत और उसके ज़रूरियात का विरोधी हो तो यह उस मानव मन के लिए अपमान है जो सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा मानव को दिया गया है!

****

(प्रश्न) : हिन्दू: इस्लाम के चयन का परिणाम आख़िरत में क्या है?

(उत्तर14) : मुस्लिम: अल्लाह फरमाता है:

[وَمَن يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَى(٧٥) جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَلِكَ جَزَاءُ مَن تَزَكَّى(٧٦)] [سورة طه: ٧٥-٧٦]

(और जो उसके हुज़ूर ईमान के साथ आए कि अच्छे काम किये हों तो उन्हीं के द्रज़े ऊंचे बसने के बाग़ जिनके नीचे नेहरे बहे हमेशा उनमें रहे, और यह सिला है उसका जो पाक हुआ) [सूरए तॉहा: 75-76]

परमेश्वर सर्वशक्तिमान पवित्र कुरआन की इस आयत में हमें बताता है कि उन लोगों के लिए सुंदर और महान इनाम है जो लोग सर्वशक्तिमान पर ईमान लाए उसे तनहा

माबूद तस्लीम किया और अल्लाह को राज़ी करने के लिए इखलास नियत से अच्छे काम किये उसके आदेश के अनुपालन अधीन स्वयं को उसके सामने आत्मसपर्मित किया !और यह इनआमात हैं:

अमरत्व सुवर्ग में उच्च स्थान जहाँ हमेशा हमेशा के लिए आराम है जो अविनाशी और ना खत्म होने वाला है!

-इस्लाम में स्वर्ग का वर्णन:

1-स्थायी सुख जो न काम होगा न ख़तम होगा!

2- जन्नतियों के लिए चमकदार और ढंग से सजाया हुआ!

3- उसकी मिट्टी तीव्र सफेद और धूल अच्छी तेज़ खुशबूदार शुद्ध कस्तूरी है वहां के कंकड़ (छोटे पत्थर) मोती और माणिक के हैं !

4- वहां की महलें सोने और चांदी की हैं!

5- स्वर्ग की नदियां विविध और बहुतायत की वजह से बहुत ही सुंदर और दिलकश हैं कुछ नदियां शुद्ध पानी की हैं और कुछ दूध की हैं जिसका स्वाद नहीं बदला है और कुछ नदियां निर्मल शहद की हैं ... इसके अलावा और अन्य!

6- स्वर्ग हरे बागानों और रसीले फलों के पेड़ से भरा हुआ है!

7-हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि:

" إن في الجنة لشجرة يسير الراكب في ظلها مائة سنة... " (رواه البخاري).

"स्वर्ग में एक पेड़ है जिसकी छाया में यात्री सौ साल तक चलता रहेगा..." [वर्णनकर्ता:बुखारी]

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि:

" مَا فِي الْجَنَّةِ شَجَرَةٌ إلا وَسَاقُهَا مِنْ ذَهَبٍ " . (رواه الترمذي).

"स्वर्ग में सरे पेड़ों का जड़ सोने का है" [वर्णनकर्ता: तिर्मिज़ी]

8- उसके फल अच्छे विविध और ज़्यादा है और कभी किसी भी समय कम नहीं होता !

9- स्वर्ग में विभिन्न प्रकार के सभी स्वादिष्ट भोजन मौजूद है (जैसे विभिन्न प्रकार के मांस .....) और पेय...!

10-वहां आँखों की आनदं और दिल की ख़ाहिश की सारी चीजें मौजूद हैं वहां ऐसी ऐसी नेमतें मौजूद हैं जिसे आँखों ने ना कभी देखा और ना कान ने कभी सुना और ना ही आदमी के दिल में उसके बारे कोई ख्याल आया!

<u>इस्लाम में जन्नतियों के वर्णन:</u>

1-उनके चेहरे बहुत अच्छे और खूबसूरत होंगे, पूर्णिमा की रात की चाँद की तरह कोमल चमकदार!

2- उनकी लंबाई साठ हाथ होगी!

3- उनकी आयु ३३ वर्षीय होगी, कभी बूढ़े नहीं होंगे, हमेशा जवान रहेंगे, न उनकी जवानी ख़तम होगी और न उनके कपड़े पुराने होंगें, वे हमेशा नेमतों में रहेंगे और उनको कभी मृत्यु नहीं आएगी!

4- तंदुरुस्त, कभी बीमार नहीं होंगे!

5- सर्वशक्तिमान ईश्वर की प्रसन्नता का आनंद लेंगे ईश्वर उन पर कभी आक्रोशित नहीं होगा, उनको कभी चिंता, संकट ग़म, तकलीफ ,कष्ट और तकलीफ नहीं होगी हमेशा खुश रहेंगे कभी कोई तकलीफ नहीं होगी !

6- सर्वशक्तिमान ईश्वर की दर्शन का आनंद लेंगे (सर्वशक्तिमान को इहाता किये बिना क्योंकि सर्वशक्तिमान ईश्वर उस जैसा कोई नहीं) आपस में कोई किसी से ईर्षा या डाह नहीं करेगा उनके दिल एक आदमी के दिल की तरह होगा उनके बीच आपस में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं होगा !

7- हर तरह की स्वादिष्ट चीजें खाएं पिएंगें!

8- न थूकेंगे न बलगम करेंगें न पेशाब करेंगें न लैट्रिन करेंगें उनका ज़ियादा खान पान खाल के पसीने द्वारा निकल जाएगा उसकी खुशबू कस्तूरी से भी अच्छी होगी !

10- एक जन्नती को सौ आदमी का बल दिया जाएगा

11- हूरें ऐन (स्वर्ग की महिलाओं) से शादी करेंगे यदि स्वर्ग की महिलाओं में से कोई पृथ्वी पर आ जाए तो उनकी हुस्न और जमाल की वजह से स्वर्ग और पृथ्वी के बीच जो कुछ है नूर से रौशन हो जाएगा और इन दोनों के बीच हवा अच्छी खुशबु से भर जाएगी ज्ञान हो कि पवित्र मुस्लिम महिलाओं को सर्वशक्तिमान ईश्वर पुनर्जीवित करेगा और नए सिरे से बनाएगा तो हूरें ऐन (स्वर्ग की महिलाओं) से भी ज्यादा खूबसूरत हो जाएगीं और वह स्वर्ग में अपने पति के साथ रहेंगी!

12- उनका हुस्न और जमाल लगातार नया होता रहेगा और हमेशा बढ़ता रहेगा!

13- आत्म प्रेरणा से थोड़ी सी भी परेशानी या थकान के बिना सर्वशक्तिमान ईश्वर की स्तुति और प्रशंसा में लगे रहेंगे!

पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि:

"إنّ الله عَزّ وجَلّ يقُول لأهل الجَنّة: يا أهل الجَنّة. فيقولون: لبَّيْك ربنا وسَعْدَيْك والخَيْر في يديك. فيقول: هل رَضِيتم؟ فيقولون: وما لنا لا نَرْضى يا ربنا وقد أعطَيْتَنا ما لم تُعْط أحَدًا مِن خَلْقك؟ فيقول: ألا أُعْطِيكم أفضل من ذلك؟ فيقولون: يا رب! وأي شيء أفْضَل مِنْ ذلك؟ فيقول: أحلّ عليكم رضْواني فلا أسْخَط عَلَيْكُم بَعْدَه أبَدًا "

[رواه مسلم].

" ईश्वर सर्वशक्तिमान स्वर्ग के लोगों से फरमाएगा: हे स्वर्ग के लोगों, वे कहेंगें: लब्बैक व सादैक हमारे प्रभु अच्छाई तेरे दस्ते कुदरत में है , फिर परमेश्वर कहेगा: क्या तुम लोग राजी हुए ? तो स्वर्ग के लोग कहेंगें: हम क्यों राजी नहीं होंगे, हे प्रभु तूने मुझे वह सब दिया जो अपनी रचना में किसी को भी नहीं दिया, फिर परमेश्वर कहेगा: क्या मैं उससे भी बेहतर तुम्हें न दूं? वे कहेंगें: हे प्रभु उस से बेहतर क्या चीज़ है? फिर परमेश्वर कहेगा: मैं तुम लोगों से राजी हूँ अब तुम लोगों पर कभी नाराज़ नहीं हूँगा" [मुस्लिम द्वारा वर्णित]

पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि:

"إذا دخل أهل الْجَنَّةِ الْجَنَّةَ قَالَ: يَقُولُ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: تُرِيدُونَ شَيْئًا أَزِيدُكُمْ؟ فَيَقُولُونَ أَلَمْ تُبَيِّضْ وُجُوهَنَا أَلَمْ تُدْخِلْنَا الْجَنَّةَ وَتُنَجِّنَا مِنْ النَّارِ؟، قَالَ: فَيَكْشِفُ الْحِجَابَ، فَمَا أُعْطُوا شَيْئًا أَحَبَّ إِلَيْهِمْ مِنْ النَّظَرِ إِلَى رَبِّهِمْ عَزَّ وَجَلَّ وهي الزيادة" ثُمَّ تَلَا هَذِهِ الْآيَةَ" :لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ" [رواه مسلم]

"स्वर्ग के लोगों को स्वर्ग में प्रवेश करने के बाद कहा जाएगा: सर्वशक्तिमान भगवान फरमाएगा: क्या आप लोग कुछ और चाहते हैं क्या कुछ अधिक कर दूँ? तो वे कहेंगे प्रभु क्या तू ने हमें स्वर्ग में दाखिल नहीं किया और नरक से नहीं बचाया? पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहुअलैहिवसल्लम फरमाते हैं कि: परमेश्वर अपना पर्दा हटा लेगा तो जो कुछ भी उन्हें दिया गया है उस से अधिक प्रिय सर्वशक्तिमान परमेश्वर को देखना होगा और यह ज़यादा होगा"फिर इस आयात का पाठ किया: "भलाई वालों के लिये भलाई है और इस से भी अधिक और उनके मुंह पर न चढ़ेगी सियाही और ख़्वारी वही जन्नत वाले हैं, वो उसमें हमेशा रहेंगे" [मुस्लिम द्वारा वर्णित]

एक सरल उदाहरण के साथ, जो इस प्रकार है है: सर्वशक्तिमान ईश्वर का दीदार उसे अहाता किये बिना होगा, सर्वशक्तिमान ईश्वर को जीव की नजर अहाता नहीं कर सकती सर्वशक्तिमान ईश्वर जगह और समय से बेनियाज़ हैं सर्वशक्तिमान समय और जगह का निर्माता है!

****

(प्रश्न): मुस्लिम: आप के प्रश्नों के उत्तर और स्पष्टीकरण के बाद मैं आप से प्रश्न करना चाहता हूँ की इस्लाम के बारे अब आप की क्या राय है?

(उत्तर): हिन्दू: तथ्य यह है कि मैंने इस्लाम को तर्क संगत और उस प्रकृति के साथ सामंजस्य पाया है जिस पर अल्लाह ने सब को पैदा किया है मैंने इस्लाम में हर उस प्रश्न का तार्किक एवं प्रारूपिक जवाब पाया है जिसके बारे में सोचता था और जिसका तर्क संगत उत्तर चाहता था! इसके अलावा प्रश्नों का उत्तर देते हुए आपने जो जन्नत की व्याख्या की है जिसे अल्लाह ने आस्तिक के लिए बनाया है तो मेरा भी शौक उसके लिए मचल गया

जहाँ हमेशा हमेशा के लिए आराम है और कोई भी तकलीफ नहीं और सब से बड़ी नेमत अल्लाह का दीदार है और जब जन्नत इतने अच्छे और ख़ूबसूरत विवरण के साथ बनाया गया है तो इसमें कोई संदेह नहीं की उसके निर्माता अल्लाह सुब्हानहु तआला महान है

(प्रश्न): मुस्लिम: तो क्या आप इस्लाम धर्म स्वीकार करते है?

(उत्तर) : हिन्दू: बिल्कुल, अभीप्सा और स्वागत के साथ अब मैं उस फितरत से असहमति नहीं करना चाहता जिस पर सर्वशक्तिमान ईश्वर ने हमें पैदा किया, इसी तरह सर्वशक्तिमान ईश्वर ने हमें अक्ल विचार करने और विवेक जैसी नेमत से नवाजा है इसी वजह से मैं उस चीज़ से असहमति नहीं करना चाहता जो अक़्ल सलीम से संगत है!

****

(प्रश्न) : हिन्दू: किस प्रकार इस्लाम धर्म स्वीकार किया जा सकता है?

(उत्तर) : मुस्लिम: वास्तव में हम कह सकते हैं कि: किस प्रकार इस्लाम में लौटा जा सकता है, बजाय यह कहने कि किस प्रकार इस्लाम धर्म स्वीकार किया जा सकता है क्योंकि इस्लाम दीने फितरत है जिस पर ईश्वर ने लोगों को पैदा किया है और जो उनकी प्रकृति के अनुरूप है !

बहरहाल, इस्लाम धर्म में प्रवेश निर्माता अल्लाह पर और उसकी वहदानियत पर दिल से ईमान लाने से होगा (वह भगवान सर्वशक्तिमान है) और अल्लाह के आखरी दूत पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत की सच्चाई पर दिल से ईमान लाने से होगा और कलमा शहादत इस प्रकार पड़ना होगा:

أشهد أن لا إله إلا الله وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

मैं गवाही देता हूँ की अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ की हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं! इस तरह कोई भी आदमी बिना किसी रस्म और औपचारिकताओं के आवश्यकता के मुसलमान बन जाता है, और दुनिया भर के सभी मुसलमानों के लिए इस्लाम का एक नया भाई (या बहन) बन जाता है।

हिन्दू:

أشهد أن لا إله إلا الله وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

मैं गवाही देता हूँ की अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ की हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं, अब से मैं एक मुस्लिम बन गया

मुस्लिम: बधाई मेरे प्यारे भाई और इस्लाम में नए भाई के रूप में आपका स्वागत है

हिन्दू: सारी प्रशंसा सर्वशक्तिमान परमेश्वर के लिए जिस ने मुझे नेमते इस्लाम की हिदायत दी और मुझे इसकी तरफ निर्देशित किया!

****

अंत में, सारी तारीफें सर्वशक्तिमान अल्लाह के लिए जिस ने हमें इस्लाम की दौलत से नवाज़ा और इसके द्वारा हम पर एहसान किया और हमें एकेश्वरवाद और मुस्लिम बनाया, हम सब से अच्छे धर्म को मानते हैं जिसे पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लेकर आएं !

अल्लाह का दरूद और सलाम हो पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर और तमाम अहले बैत पर और तमाम सहाबा पर और उन लोगों पर जो आप के रस्ते पर चले और हिदायत पाई और सुन्नतों पर काइम रहे और क़यामत के दिन तक इसका पता लगाते रहे!

और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए हैं, जो सारे संसार का रब हैं।

والحمد لله رب العالمين.